mediaauditornews@gmail.com mediaauditor Epaperdainikmediaauditor.in mediaauditor वर्ष-04 अंक-160 पृष्ठ-8 मूल्य-3 रूपये

सतना
10 जून 2024 सोमवार

दैनिक मीडिया ऑडीटर

दैनिक मीडियाऑडीटर

सतना, रीवा से एक साथ प्रकाशित

क्यूरेटर भी ...

मणिपुर में बवाल, जिरीबाम में 2 पुलिस चौकियां, 70 घर जलाए

इंफाल (एजेंसी)। मणिपुर के जिरीबाम जिले में शनिवार 8 जून को संदिग्ध उग्रवादियों ने दो पुलिस चौकियों, एक फॉरेस्ट ऑफिस और 70 घरों में आग लगा दी। पुलिस का कहना है कि हमलावर 3-4 नावों पर सवार हो बराक नदी के रास्ते घुसे थे। इससे पहले गुरुवार 6 जून को भी कुछ मैतेई गांवों और पुलिस चौकियों पर हमले हुए थे। सूत्रों के अनुसार, चिन-कुकी आतंकवादियों को खत्म करने के लिए बांग्लादेश की सरकार के निर्देश के बाद 200 से अधिक आतंकी बांग्लादेश में भारतीय सीमा में भाग गए हैं। वे मिजोरम के रास्ते मणिपुर में प्रवेश करने की ताक में हैं। इधर, आग लगाने की घटना जीरी मुख और छोटो बेकरा की पुलिस चौकियों और गोआखाल वन बीट ऑफिस में हुई। इस घटना के कुछ घंटों बाद एसपी का तबादला कर दिया गया है। आदेश के अनुसार जिरीबाम एसपी ए घनश्याम शर्मा को मणिपुर पुलिस ट्रेनिंग कॉलेज के एडीशनल डायरेक्टर पद पर ट्रांसफर कर दिया है। उधर, इनर मणिपुर लोकसभा सीट से नवनिर्वाचित कांग्रेस सांसद अंगोमचा बिमोल अकोईजाम ने राज्य सरकार से जिरीबाम के लोगों के जीवन और संपत्ति की रक्षा करने का आग्रह किया। मणिपुर में मई 2023 से जातीय हिंसा जारी है। यहां मैतेई और पहाड़ी इलाकों में रहने वाले कुकी के बीच जातीय संघर्ष में 200 से अधिक लोगों की मौत हो गई है और हजारों लोग बेघर हो गए हैं। मैतेई, मुस्लिम, नागा, कुकी और गैर-मणिपुरी समेत विविध जातीय संरचना वाला जिरिबाम अब तक जातीय संघर्ष से अछूता रहा था। यहां गुरुवार 6 जून की शाम संदिग्ध उग्रवादियों ने 59 साल के एक व्यक्ति की हत्या कर दी। सोइबाम सरतकुमार सिंह नाम का यह व्यक्ति 6 जून को अपने खेत में गया था, जिसके बाद वह लापता हो गया।

- एसपी का तबादला, 200 उग्रवादी मणिपुर में घुसपैठ की फिराक में

संक्षिप्त समाचार

व्हाइट हाउस के सामने 30 हजार फिलिस्तीन समर्थकों का प्रदर्शन

- बाइडेन का खून से सना मुखौटा लेकर बोले-गाजा में मरे बच्चों की चीख इन्हें डराएगी

वाशिंगटन (एजेंसी)। गाजा में इजराइल के हमलों के बीच शनिवार को अमेरिका में राष्ट्रपति के आधिकारिक निवास व्हाइट हाउस के बाहर 30 हजार फिलिस्तीन समर्थकों ने प्रदर्शन किया। लोग सिर पर हमास का पट्टा बांधकर फिलिस्तीन का झंडा लहराते नजर आए। इस दौरान प्रदर्शन कर रहे एक शख्स के हाथ में राष्ट्रपति

बाइडेन का मुखौटा भी था, जो खून से सना हुआ था। प्रदर्शन कर रहे लोगों ने अमेरिका के झंडे में आग भी लगाई। लोगों के हाथ में कई बैनर और पोस्टर भी थे। इसमें बाइडेन पर इतिहास के गलत पक्ष में होने का आरोप लगाया गया। प्रदर्शनकारियों ने आजाद फिलिस्तीन के नारे लगाए। उन्होंने कहा कि गाजा पर बमबारी में जितने बच्चों की जान गई है, उनकी चीख आपको हमेशा डराती रहेगी। प्रदर्शनकारियों ने नेशनल पार्क के सर्विस रेंजर्स पर सामान भी फेंके। इसके अलावा वहां लगे स्टैच्यू को भी खंडित किया।

श्रीनगर में श्रद्धालुओं को ले जा रही बस पर हमला

- 10 की मौत; दिल्ली में पीएम मोदी के शपथ ग्रहण के दौरान हुआ टेररिस्ट अटैक

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के रियासी में आतंकियों ने श्रद्धालुओं को ले जा रही बस पर हमला किया है। इसमें 10 लोगों के मारे जाने की खबर है, जबकि कई लोग घायल हुए हैं। नई दिल्ली में पीएम मोदी और नई कैबिनेट के शपथ ग्रहण समारोह के दौरान ये टेररिस्ट

अटैक हुआ है। यह हमला रियासी जिले के कंदा इलाके में हुआ। आतंकियों ने बस पर ओपन फायर किया, जिसमें ड्राइवर घायल हुआ और उसका बस से कंट्रोल खो गया। इसके चलते बस खाई में गिर गई। 10 लोगों की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि कुछ लोग गोली लगने से घायल हुए हैं। बस में सवार अन्य यात्रियों का रेस्क्यू जारी है। बस श्रद्धालुओं को लेकर कटरा से शिव खोड़ी मंदिर जा रही थी। शिव खोड़ी मंदिर माता वैष्णो देवी का बेस कैंप है।

नीट विवाद: 1563 स्टूडेंट्स के अंकों की फिर से होगी जांच

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्र सरकार ने नीट-यूजी में ग्रेस अंक विवाद को फिर से जांचने के लिए 4 सदस्यीय कमेटी का गठन किया है। यह जानकारी शनिवार को नेशनल टेस्टिंग एजेंसी (एनटीए) ने दी। एनटीए के डायरेक्टर जनरल सुबोध कुमार सिंह ने बताया कि कमेटी से एक हफ्ते में रिपोर्ट देने को कहा गया है। इसके बाद यह तय होगा कि आगे क्या करना है। नीट-यूजी 2024 के रिजल्ट पर सवाल उठ रहे हैं। एनटीए ने 1563 स्टूडेंट्स को ग्रेस मार्क दिए हैं। आरोप है कि इससे 67 छात्रों की ऑल इंडिया रैंक 1 आई। नीट-यूजी 2024 में 24 लाख बच्चे बैठे थे। रिजल्ट 4 जून को आया था। डायरेक्टर जनरल सिंह ने बताया कि हमारी कमेटी 1563 कैंडीडेट्स और 6 सेंटर्स की जांच करेगी, जहां ग्रेस मार्क्स मिले हैं। हमारे पास सेंटर्स की मॉनिटरिंग के लिए सीसीटीवी हैं। सेंटर्स की रिपोर्ट्स भी हैं।

- ग्रेस मार्क विवाद में बड़ा फैसला,जांच के लिए पैनल गठित
- एनटीए बोला-एक हते में आएगी रिपोर्ट, छात्रों का प्रदर्शन

ये सेंटर्स मेघालय, बहादुरगढ़ (हरियाणा), दंतेवाड़ा, बालोद (छत्तीसगढ़), सूरत (गुजरात) और चंडीगढ़ के हैं। इस बीच रिजल्ट में गड़बड़ियों के विरोध में दिल्ली और कलकत्ता हाईकोर्ट में याचिका दायर की गई हैं। एग्जाम में टॉपर्स की बढ़ी हुई संख्या, मार्किंग स्कीम से अलग ग्रेस मार्क्स देना, आंसर की में बदलाव और एग्जाम से पहले ही पेपर लीक जैसे आरोप लगाए गए हैं। सिंह ने कहा, स्टूडेंट्स को ग्रेस अंक देने से नतीजों या क्वालिफाइंग क्राइटेरिया पर कोई फर्क नहीं पड़ा है। उन्होंने बताया कि यह मसला सिर्फ 1563 स्टूडेंट्स का है। पेपर 23 लाख से ज्यादा बच्चों ने दिया था। 4750 सेंटर की बजाय सिर्फ 6 सेंटर का मामला है। कमेटी 1563 स्टूडेंट्स को दिए गए ग्रेस मार्क्स और टाइम लॉस की जांच करेगी। जरूरत पड़ी तो रिजल्ट संशोधित किया जाएगा।

मोदी ने ली 'तीसरी शपथ'

मोदी-मोदी के नारों के बीच फिर बने प्रधानमंत्री

नई दिल्ली (एजेंसी)। नरेंद्र मोदी ने रविवार शाम को लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ ली। वे नेहरू के बाद ऐसा करने वाले दूसरे पीएम बन गए हैं। मोदी ने ईश्वर के नाम की शपथ ली। इसके बाद राजनाथ, शाह, गडकरी, नड्डा और शिवराज सिंह चौहान ने शपथ ली। पीएम मोदी नेहरू के बाद ऐसा करने वाले दूसरे पीएम बन गए हैं। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने उन्हें यहां राष्ट्रपति भवन में आयोजित एक समारोह में पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई। इसके साथ ही मोदी ने लगातार तीन बार प्रधानमंत्री बनने के देश के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के रिकॉर्ड की बराबरी कर ली। मोदी 2014 में लोकसभा चुनाव में भाजपा की जीत के बाद पहली बार देश के प्रधानमंत्री बने थे। इसके बाद 17वीं लोकसभा के चुनाव में भारी बहुमत से जीत के बाद वह लगातार दूसरी बार प्रधानमंत्री बने। नेहरू 1947 से स्वतंत्रता के बाद से सबसे लंबे समय तक सेवा देने वाले भारतीय प्रधानमंत्री हैं। उनकी मृत्यु 27 मई 1964 को हुई थी और वह उस समय भी देश के प्रधानमंत्री थे। साल 1952 में हुए पहले आम चुनाव में जीत के बाद वह पहली बार प्रधानमंत्री निर्वाचित हुए थे। इसके बाद 1957 और 1962 के आम चुनावों में भी कांग्रेस ने जीत दर्ज की और नेहरू फिर देश के प्रधानमंत्री बने। साल 2024 के लोकसभा चुनाव में भाजपा पूर्ण बहुमत हासिल नहीं कर पाई है। उसे 240 सीटें मिली हैं। हालांकि, भाजपा नीत राजग ने 293 सीटों के साथ बहुमत के आंकड़े को पार कर लिया।

- राजनाथ, अमित शाह, गडकरी व ज्योतिरादित्य समेत 30 कैबिनेट मिनिस्टर
- नड्डा-शिवराज को भी जगह,मेघवाल समेत 5 स्वतंत्र प्रभार के राज्यमंत्री

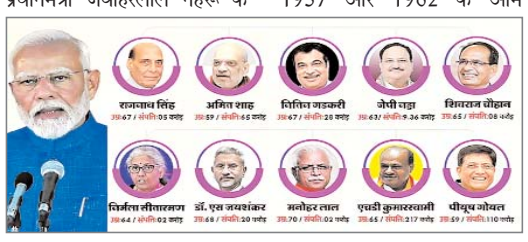

मोदी-मोदी के नारों से गूंजा समारोह स्थल, झुककर किया नमस्ते

शपथ ग्रहण कार्यक्रम में नरेंद्र मोदी सफेद कुर्ता पायजामा और नीले रंग की जैकेट पहनकर राष्ट्रपति भवन पहुंचे। समारोह में पहुंचकर उन्होंने झुककर सभी सांसदों और मेहमानों को नमस्ते किया। प्रधानमंत्री के तौर पर शपथ लेने के लिए जैसे ही नरेंद्र मोदी उठे, मोदी-मोदी के नारों से पूरा समारोह स्थल गूंज उठा। शपथ लेने के बाद पीएम मोदी ने हस्ताक्षर किए और राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को धन्यवाद दिया। इसके बाद पीएम मोदी अपनी सीट पर जाकर बैठ गए। उनके साथ-साथ एनडीए सरकार की नई कैबिनेट में शामिल होने वाले मंत्रियों को भी शपथ दिलाई गई। कैबिनेट में शामिल होने वाले नए मंत्रियों में मध्य प्रदेश के पूर्व सीएम शिवराज सिंह चौहान, हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर और पंजाब से आने वाले रवनीत सिंह बिट्टू का नाम शामिल है। रवनीत सिंह बिट्टू को लोकसभा चुनाव में हारने के बावजूद मंत्री बनाया गया है।

मुंबई पहुंचा मानसून

'झमाझम' बारिश से झूमे लोग

मुंबई (एजेंसी)। देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में मानसून ने दस्तक दे दी है। रविवार की सुबह मुंबई में मानसून की पहली बारिश हुई। मेगा सिटी के काफी इलाकों में भारी बारिश हुई। इससे लोगों को गर्मी से राहत मिली। मौसम विभाग के अनुसार मुंबई और उसके आसपास के इलाकों में पिछले 24 घंटों में अच्छी बारिश रिकॉर्ड की गई है। बारिश से पारा नीचे आया है। लोगों को भीषण गर्मी से राहत मिली। दक्षिणी पश्चिम मानसून के मुंबई पहुंचने की तारीख पहले 11 जून थी, लेकिन मानसून ने 9 जून को ही मुंबई में दस्तक दे दी।

- बारिश से 'तरबतर' हुई मुंबई नगरिया, पालघर में सड़क धंसी

अभी और तपेंगे एमपी-यूपी समेत देश के सात राज्य

देश में हीटवेव का सिलसिला लगातार जारी है। शनिवार (8 जून) को 6 राज्यों- हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, गुजरात की 35 जगहों का तापमान 42 डिग्री से ज्यादा दर्ज किया गया। उत्तर प्रदेश का प्रयागराज 45.2ए सेल्सियस के साथ देश में सबसे गर्म रहा। उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, मध्य प्रदेश, पश्चिम बंगाल, बिहार, झारखंड और ओडिशा के कुछ स्थानों में आज से अगले 5 दिन तक हीटवेव चलने की संभावना है। वहीं, जम्मू-कश्मीर, लद्दाख, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, पंजाब, हरियाणा, चंडीगढ़, दिल्ली, उत्तर प्रदेश में अगले पांच दिन में तापमान में 3 से 5 डिग्री की बढ़ोतरी हो सकती है। वहीं, उत्तर भारत में पड़ रही गर्मी के बीच रविवार (9 जून) को मानसून मुंबई पहुंच गया। इसके यहां पहुंचने की अनुमानित तारीख 11 जून थी। छत्तीसगढ़ और ओडिशा में शनिवार 8 जून को मानसून की एंट्री हुई। राजस्थान के बाड़मेर, जैसलमेर में तेज बारिश हुई।

मोदी के शपथ ग्रहण में आए 7 देशों के लीडर्स

आडवाणी से मिलीं बांग्लादेश की पीएम शेख हसीना

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी रविवार को तीसरी बार भारत के प्रधानमंत्री बन गए हैं। शाम 7.15 बजे राष्ट्रपति भवन में नरेंद्र मोदी ने प्रधानमंत्री पद की शपथ ले ली है। इस समारोह में शामिल होने के लिए भारत के 7 देशों के लीडर्स को न्योता दिया गया है। शपथ ग्रहण के लिए मेहमानों के आने का सिलसिला शुरू हो चुका है। रविवार सुबह मालदीव के राष्ट्रपति मोहम्मद मुइज्जू पहली बार भारत पहुंचे। उनके ठीक बाद मॉरीशस के प्रधानमंत्री प्रविंद जुगनॉथ भी दिल्ली आए। दोपहर करीब 12 बजे भूटान के पीएम दाशो शेरिंग तोबगे और फिर श्रीलंका के राष्ट्रपति रानिल विक्रमसिंघे दिल्ली के इंदिरा गांधी इंटरनेशनल एयरपोर्ट पहुंचे। वहीं नेपाल के पीएम प्रचंड भी भारत आ चुके हैं। दूसरी तरफ, बांग्लादेश की पीएम शेख हसीना और सेशेल्स के उपराष्ट्रपति अहमद अफीफ एक दिन पहले शनिवार 8 जून दोपहर में ही भारत आ गए थे। भारत की नेबरहुड फर्स्ट पॉलिसी और सागर विजन के तहत इन देशों को समारोह में बुलाया गया है। विदेशी मेहमानों के ठहरने की व्यवस्था दिल्ली के सबसे बड़े होटलों में की गई है। इनमें मौर्या, ताज होटल, ओबेरॉय, क्लैरिजेस और लीला होटल शामिल हैं। इनकी सुरक्षा के लिए पैरामिलिट्री और दिल्ली आर्म्ड पुलिस के 2500 जवानों को तैनात किया गया है। इसके अलावा इलाके में स्नाइपर और पुलिसबल भी मौजूद है। विदेशी लीडर्स के एयरपोर्ट से होटल और वेन्यू तक के रास्ते की ड्रोन्स के जरिए निगरानी की जा रही थी।

- पहली बार भारत पहुंचे मालदीव के राष्ट्रपति मुइज्जू

शपथ ग्रहण से पहले संभावित कैबिनेट से मिले पीएम मोदी

नई दिल्ली (एजेंसी)। नरेंद्र मोदी ने रविवार को तीसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ ले ली हैं। दोपहर में उन्होंने अपने आवास 7 लोक कल्याण मार्ग पर सभी नेताओं के लिए हाई-टी का आयोजन किया। इस बैठक में मोदी ने सरकार के शुरुआती 100 दिन के रोडमैप पर चर्चा की। मोदी ने कहा कि इस रोडमैप को लागू करना है और पेंडिंग योजनाओं को भी पूरा करना है। इस बैठक में भाजपा नेता अमित शाह, राजनाथ सिंह, नितिन गडकरी, पीयूष गोयल, गजेंद्र सिंह शेखावत, गिरिराज सिंह, धर्मेंद्र प्रधान, मनसुख मंडाविया,किरेन रिजिजू, ज्योतिरादित्य सिंधिया, एलजेपी (राम विलास) के अध्यक्ष चिराग पासवान, रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया के राज्यसभा सांसद रामदास अठावले, जनता दल (यू) के रामनाथ ठाकुर समेत करीब 60 नेता शामिल हुए थे। बैठक खत्म होने के बाद हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री और करनाल से सांसद मनोहर लाल खट्टर ने कहा कि यह नरेंद्र मोदी की परंपरा है कि वे चाय पर चर्चा के लिए अपने आवास पर लोगों को बुलाते हैं।

- 100 दिन के रोडमैप पर की चर्चा, पेंडिंग योजनाओं को पूरा करने का दिया निर्देश

संक्षिप्त समाचार

भोपाल में तीन दिवसीय केरल फेस्ट का दूसरा दिन

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। भोपाल के बिट्टन मार्केट में आयोजित तीन दिवसीय केरल फेस्ट में कला एवं संस्कृति की अद्भुत प्रस्तुतियां देखने को मिली। केरल अपने प्राकृतिक सौंदर्य, मसालों और सांस्कृतिक विरासत के लिए देश ही नहीं दुनिया भर में मशहूर है। यहां पर कई लोकनृत्य , संगीत और शास्त्रीय संगीत की विविधता है। केरल में लगभग 50 नृत्य शैलियां हैं । उनमें दो शास्त्रीय नृत्य रूप कथकली और मोहिनीअट्टम के बेहद लोकप्रिय है। इसके साथ ही थेय्यम, थिरुवथिराकली, चाक्यार कुथु कूडियाट्टम और ओट्टमथुलाल भी विश्व प्रसिद्ध नृत्य शैली हैं। इस मौके पर भोपाल में केरल की समृद्ध परम्पराओं और जीवंत सांस्कृतिकता का अनूठा रंग देखने को मिला। कार्यक्रम में प्रतिभालय आर्ट्स अकादमी ने एक से बढ़कर एक आकर्षक प्रस्तुति के साथ दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। डॉ. मंजु और विशाल हटवालने द्वारा संगठित शास्त्रीय नृत्य खंड ने इस आश्चर्यजनक प्रदर्शन के लिए मंच प्रस्तुत किया। नृत्यकारों की अभिव्यक्तिपूर्ण गतियाँ और भावपूर्ण कहानियों ने दर्शकों को मोहित कर दिया।

महाराणा प्रताप की 484वीं जयंती महोत्सव

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्यप्रदेश राजपूत समाज ने रविवार को महाराणा प्रताप की 484वीं जयंती महोत्सव के अवसर पर विभिन्न कार्यक्रम का आयोजन किया। समाज के अध्यक्ष विनय भदौरिया के नेतृत्व में समाज जनों ने ज्योति टॉकीज स्थित महाराणा प्रतिमा की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। इस मौके पर बड़ी संख्या में समाज जन मौजूद रहे। सभी ने बलिदान और संघर्ष को याद करते हुए नमन किया। राजदीप सिंह चौहान ने बताया कि मप्र राजपूत समाज संस्था के चार इमली स्थित भवन में जिला स्तरीय चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन शाम 4.30 बजे किया जाएगा।

भोपाल में शिक्षामंत्री से मिले सोसाइटी फॉर प्राइवेट स्कूल डायरेक्टर

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। फीस निर्धारण के लिए इन्फ्रास्ट्रक्चर बताने की तारीख बढ़ाए जाने के बाद सोसाइटी फॉर प्राइवेट स्कूल डायरेक्टर (सोपास) के बैनरतले स्कूल संचालक एक बार फिर स्कूल शिक्षा मंत्री राव उदय प्रताप सिंह से मिले। उन्होंने पॉवर प्वाइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से अपनी समस्याएं मंत्री को बताईं और कहा कि इन समस्याओं के कारण स्कूल संचालित करने में दिक्कत आ रही है। पिछले दिनों में स्कूल संचालकों ने मंत्री के साथ यह पांचवीं बैठक थी। सोपास के सदस्यों का दावा है कि चर्चा के बाद मंत्री ने सारी समस्याओं का समाधान करने के लिए विभागीय अधिकारियों को निर्देशित किया। उन्होंने कहा कि सुझावों की वरीयता के आधार पर समस्याओं का निराकरण करें। फीस अधिनियम में जानकारी जमा करने की अंतिम तिथि बढ़ाने की लिए भी उन्होंने सहमति दी। वहीं फीस प्रतिपूर्ति जून माह में करने का आश्वासन दिया। विभागीय अधिकारियों को भी समस्याएं गिनाई गईं। प्रतिनिधिमंडल में प्रदेश अध्यक्ष डॉ. आशीष चटर्जी, प्रदेश उपाध्यक्ष एसके दुबे, प्रदेश महासचिव प्रवीण पाणिकर और संयुक्त सचिव देवेंद्र कुमार पटेल शामिल थे। संस्थापक सदस्य दीपक सिंह राजपूत ने प्रतिनिधिमंडल को बधाई दी।

मंशापूर्ण हनुमान मंदिर,अवधपुरी में 52वां हनुमान चालीसा पाठ

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। भोपाल के अवधपुरी स्थित मंशापूर्ण हनुमान मंदिर में रविवार को 52वां हनुमान चालीसा पाठ का आयोजन किया गया। इसके बाद महाआरती और प्रसाद वितरण किया गया। जिसमें बड़ी संख्या में कॉलोनीवासी शामिल हुए। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से कथावाचक पंडित निलिंप त्रिपाठी, ब्राह्मण समाज के अध्यक्ष पंडित राकेश चतुर्वेदी, अवधपुरी कल्याण समिति के सदस्य रमन तिवारी, सुरेश शर्मा, सुरेश तिवारी, संजय शुक्ला, एमके पांडे सहित बड़ी संख्या में धर्म प्रेमी बंधु शामिल हुए। बता दें कि पिछले 1 वर्ष से अवधपुरी के मंशापूर्ण हनुमान मंदिर में प्रत्येक रविवार को हनुमान चालीसा का पाठ किया जाता है।

नंदीश्वर जिनालय लालघाटी में गुरू उपकार दिवस

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। भोपाल के लालघाटी स्थित नंदीश्वर जिनालय में श्रद्धा भक्ति और आस्था का अभूतपूर्व संगम शनिवार को देखने को मिला। यहां आचार्य विनम्र सागर महाराज का दीक्षा दिवस श्रद्धा भक्ति और आस्था के साथ मनाया गया। इस मौके पर भगवान जिनेंद्र का अभिषेक और पूजा अर्चना की गई। इसके साथ ही दीक्षा दिवस पर सभी ने संकल्पित होकर प्रकृति की रक्षा और पर्यावरण बचाने का संकल्प लिया। कार्यक्रम में शहर की विभिन्न मंदिर समितियां, महिला मंडल, पाठशाला परिवार, गुरु भक्त परिवार के सदस्यों ने आचार्यश्री को अष्ट द्रव्य अर्पित किया। समाज के प्रवक्ता अंशुल जैन ने बताया कि आचार्य विराग सागर महाराज, आचार्य विशुद्ध सागर महाराज के चित्र का अनावरण और दीप प्रज्जवलन किया गया।

सांची बनेगा इंटरनेशनल ब्रांड, विदेशी बाजार में बिकेंगे उत्पाद, नेपाल और भूटान से होगी शुरुआत

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्यप्रदेश के दुग्ध उत्पादों का स्थानीय ब्रांड सांची अब अंतरराष्ट्रीय बाजार में कदम रखने जा रहा है। उसने सबसे पहले नेपाल और भूटान के बाजार में अपने दुग्ध उत्पाद बेचने की तैयारी की है। विदेश में सहकारी संघों के उत्पाद निर्यात करने वाली एजेंसी से स्वीकृति मिलते ही सांची के उत्पाद विदेशी धरती पर भी बिकने लगेंगे।

नेपाल व भूटान में सफलता के बाद श्रीलंका और बांग्लादेश में उत्पाद उतारे जाएंगे। विदेश में पहले सांची की मिठाइयां और घी बेचने की तैयारी की जा रही है। अधिकारियों का कहना है कि शुरुआती दौर में ऐसे प्रोडक्ट भेजे जाएंगे, जिन्हें स्टोर करने की समस्या न हो। सांची का घी सबसे ज्यादा पसंद किए जाने वाले उत्पादों में शामिल है। पेड़े भी बेहद पसंद किए जाते हैं। इन उत्पादों को विदेश के सुपर मार्केट और माल में उतारा जाएगा, ताकि सीधे लोगों तक पहुंचें। बाजार में इनके फीडबैक और मांग के आधार पर सांची के अन्य उत्पादों के निर्यात पर विचार किया जाएगा। सांची ने निर्यात के लिए प्रक्रिया शुरू कर दी है। फिलहाल भारतीय निर्यात निरीक्षण परीक्षा से अनुमति का इंतजार है। इसके बाद सहकारी निर्यातों का समन्वय करने वाली संस्था नेशनल कोआपरेटिव फार एक्सपोर्ट्स लिमिटेड (एनसीईएल) की अनुमति लेनी होगी। इन सभी प्रक्रियाओं से गुजरने के बाद ही सांची के उत्पाद विदेश में जा सकेंगे। हालांकि इससे पहले कमोडिटी मार्केट में सांची का पाउडर और बटर बेचा जा रहा है, लेकिन इन उत्पादों पर सांची की ब्रांडिंग नहीं होती है। बता दें कि प्रदेश में सांची के चार प्लांटों में दुग्ध उत्पाद बनाए जाते हैं। सांची के उत्पादों को विदेश के बाजारों तक पहुंचाकर इसे वैश्विक ब्रांड के रूप में स्थापित करेंगे। फिलहाल हम निर्यात करने के शुरुआती चरण में हैं और निर्यात करने वाली संस्थाओं से स्वीकृति मिलने के कुछ समय बाद हम नेपाल और भूटान में अपने उत्पाद भेजेंगे। -सतीश कुमार एस, महाप्रबंधक, मध्यप्रदेश राज्य सहकारी डेयरी संघ।

उच्च शिक्षा मंत्री श्री परमार के नेतृत्व में शुजालपुर में जमधड़ नदी के गहरीकरण का कार्य का शुभारंभ

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। राज्य सरकार द्वारा चलाए जा रहे जल-गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत उच्च शिक्षा, तकनीकी शिक्षा एवं आयुष मंत्री श्री इन्दर सिंह परमार के नेतृत्व में शनिवार को शाजापुर जिले के शुजालपुर में जमधड़ नदी में सफाई अभियान चलाकर जनसहयोग से गहरीकरण कार्य का प्रारंभ किया गया।

उच्च शिक्षा मंत्री श्री परमार ने आमजनों को स्वच्छता का संकल्प दिलाते हुए कहा कि नदी में कचरा न फेकें एवं अपने आस-पास की जगह को साफ रखकर गंदे पानी को नदी में मिलने से रोकें। जमधड़ नदी के संरक्षण में सहभागिता करें।

अभियान में विभिन्न जनप्रतिनिधियों सहित बड़ी संख्या में नगरवासियों ने सहभागिता की।

खेल मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग ने दी खिलाड़ियों को बधाई

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। म.प्र. राज्य शूटिंग अकादमी ग्राम गौरा भोपाल में 22वीं सुरेन्द्र सिंह मैमोरियल शूटिंग चौम्पियनशिप (रायफल/पिस्टल) का आयोजन भारतीय राष्ट्रीय रायफल महासंघ, नई दिल्ली के तकनीकी सहयोग से किया जा रहा है। मध्यप्रदेश के खिलाडियों ने 01 रजत और 02 कांस्य सहित 03 पदक अर्जित किये प्रतियोगिता में आज दिनांक 08.06.2024 को म.प्र. की खिलाडी कु. सुनिधि चौहान ने 50 मी. रायफल प्रोन-वूमेन स्पर्धा में 01 कांस्य पदक, एवं 50 मी. रायफल प्रोन जूनियर वूमेन स्पर्धा में कु. नुपुर कुमरावत ने 01 रजत और 50 मी. रायफल प्रोन-वूमेन टीम स्पर्धा में कु. सुनिधि चौहान, कु. नुपुर कुमरावत और कु सौम्या रघुवंशी ने 01 कांस्य सहित कुल 03 पदक अर्जित किये है। सभी पदक विजेता खिलाड़ियों का खेल और युवा कल्याण मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग ने उत्साहवर्धन करते हुये बधाई दी है। उल्लेखनीय है कि म.प्र. राज्य शूटिंग अकादमी परिसर ग्राम गौरा में आयोजित इस प्रतियोगिता में देश भर के लगभग 4000 खिलाड़ी प्रतिभागिता कर रहे है। प्रतियोगिता में रायफल और पिस्टल के मुकाबले खेले जा रहे है।

जल स्त्रोतों को संरक्षित करने सभी आगे आयें - राज्यमंत्री बागरी

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्यप्रदेश शासन नगरीय विकास एवं आवास राज्यमंत्री श्रीमती प्रतिमा बागरी ने कहा है कि जल स्त्रोतों के संरक्षण एवं संवर्धन के लिये सभी नागरिकों को आगे आना होगा। जल स्त्रोतों के पुनर्जीवन के लिए सभी नागरिकों को एकजुट होकर समन्वित प्रयास करने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि तालाबों को सहेजने की आवश्यकता है। सभी को मिलकर प्रयत्न करना होगा कि तालाबों में पानी हमेशा भरा रहे।

नगरीय विकास एवं आवास राज्यमंत्री श्रीमती बागरी ने जल स्त्रोतों के संरक्षण और पुनर्जीवन के लिए चलाये जा रहे जल-गंगा संवर्धन अभियान में शनिवार को सतना के अमौधा तालाब में आयोजित सफाई कार्यक्रम को संबोधित कर रही थीं। कार्यक्रम को महापौर सतना श्री योगेश ताम्रकार और कलेक्टर श्री अनुराग वर्मा ने भी संबोधित किया। जल-गंगा संवर्धन अभियान में आयोजित कार्यक्रम में

राज्यमंत्री श्रीमती बागरी ने कहा कि फलदार पेड़ हमारे पुरखों ने लगाए थे और उससे फल हम आज प्राप्त कर रहे हैं। हम ऐसा कार्य करें जिसका लाभ हमारी आने वाली पीढ़ी को मिले। उन्होंने कहा कि नदी और तालाब हमारे सुख-दुख के साथी हैं। घर में चाहे सुख का कार्य हो, या दुख का कार्य हो, हमेशा तालाब और वृक्ष के बिना कोई भी कार्य पूर्ण नहीं होता है। जल एवं वृक्ष हमारे सामाजिक ही नहीं बल्कि सांस्कृतिक धरोहर है, इनका संरक्षण हमारा परम कर्तव्य है। जल-गंगा संवर्धन अभियान में अमौधा तालाब की साफ-सफाई के बाद तालाब परिसर में पौधारोपण किया गया। राज्यमंत्री प्रतिमा बागरी ने कहा कि पर्यावरण दिवस पर शुरू किए गए जल-गंगा संवर्धन अभियान के तहत प्रदेश में जल-स्त्रोतों के संरक्षण और साफ-सफाई के साथ-साथ व्यापक स्तर पर पौधरोपण किया जा रहा है। जीवन के लिये जितना जरुरी जल है, उतने ही जरुरी पेड़ हैं। हर व्यक्ति को अपने जीवन में पेड़ लगाने चाहिये। उन्होंने कहा कि सभी यह संकल्प लें कि पेड़ अवश्य लगायेंगे। पेड़ नहीं लगायेंगे तो यह भूमि रेगिस्तान बनती जायेगी। उन्होंने कहा कि पेड़ लगे होंगे तो बरसात भी होगी और हरियाली भी रहेगी।

राज्यमंत्री श्रीमती गौर ने किया सम्मानित

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। पिछड़ा एवं अल्पसंख्यक कल्याण राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्रीमती कृष्णा गौर ने सुश्री अंकिता पाटकर को राज्य लोक सेवा परीक्षा में पहली रैंक पाने पर गुलदस्ता, शॉल श्रीफल भेंट कर सम्मानित किया। पिछड़ा वर्ग की अभ्यर्थी सुश्री पाटकर ने राज्यमंत्री श्रीमती गौर के निवास कार्यालय पहुंच कर उनसे भेंट की। राज्यमंत्री श्रीमती गौर ने सुश्री पाटकर के राज्य लोक सेवा आयोग की परीक्षा में पहली रैंक प्राप्त कर डिप्टी कलेक्टर के पद पर चयन होने पर शुभकामनाएं दी। सुश्री पाटकर ने बताया कि उन्होंने राज्य सरकार की पिछड़ा वर्ग के अभ्यर्थियों को नि:शुल्क कोचिंग देने की योजना का लाभ प्राप्त कर परीक्षा की तैयारी की थी।

राष्ट्रीय राजनीति में दादी-पिता की विरासत को बखूबी आगे बढ़ा रहे ज्योतिरादित्य सिंधिया

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। ग्वालियर के सिंधिया राजघराने के वंशज ज्योतिरादित्य सिंधिया अपने परिवार की राजनीतिक विरासत को बखूबी आगे बढ़ा रहे हैं। आजाद भारत में राजमाता विजयाराजे सिंधिया, उनके बेटे माधव राव सिंधिया, बेटियां वसुंधरा राजे सिंधिया, यशोधरा राजे सिंधिया और पोते ज्योतिरादित्य सिंधिया का राजनीति में दबदबा रहा है। ज्योतिरादित्य सिंधिया ने हार्वर्ड कालेज, हार्वर्ड विश्वविद्यालय से स्नातक किया। स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय में ग्रेजुएट स्कूल आफ बिजनेस से एमबीए डिग्री हासिल की। इसके उपरांत उन्होंने एक बैंकर के रूप में अपने करियर की शुरुआत की। हालांकि 30 सितम्बर 2001 को पिता

माधवराव सिंधिया की एक विमान हादसे में आकस्मिक निधन के बाद परिस्थितियों ने कुछ ऐसा मोड़ लिया कि ज्योतिरादित्य सिंधिया भी राजनीति में आ गए और उन्होंने कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण करते हुए अपने पिता की सीट गुना से चुनाव लड़ा और पहली बार संसद पहुंचे। ज्योतिरादित्य सिंधिया को मई 2004 में फिर से इसी सीट से चुना गया और 2007 में केंद्रीय संचार और सूचना प्रौद्योगिकी राज्यमंत्री के रूप में केंद्रीय मंत्री परिषद में शामिल किया गया। इसके बाद 2009 में हुए चुनाव में वह लगातार तीसरी बार गुना सीट से चुनाव जीतकर लोकसभा में पहुंचे और इस बार उन्हें वाणिज्य और उद्योग राज्य मंत्री बनाया गया। 2014 में, सिंधिया गुना से फिर चुने गए थे। लेकिन 2019 में उन्हें भाजपा के डा. कृष्णपाल सिंह यादव के मुकाबले हार झेलनी पड़ी। इसके बाद कांग्रेस पार्टी में ही एक गुट लगातार साइनलाइन करने की साजिश रचते रहा।

आखिरकार 2020 में उन्होंने अपने समर्थकों के साथ भाजपा ज्वाइन कर ली और भाजपा के टिकट पर राज्यसभा में पहुंच गए। इसके बाद 2021 में हुए मोदी कैबिनेट के विस्तार में उन्हें जगह मिली और नागरिक उड्डयन मंत्रालय का जिम्मा सौंपा गया। वर्ष 2024 में हुए लोकसभा चुनाव में वह सिंधिया राजघराने की परंपरागत सीट से भारी बहुमत से विजयी रहे और पांचवीं बार लोकसभा में पहुंचे।

वीरांगनाओं का वेश धारण कर चलीं महिलाएं, कदमताल कर दिखाया साड़ी का सौंदर्य

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। अरेरा कालोनी में शनिवार को माहेश्वरी समाज की महिलाओं द्वारा साड़ी वाकेथान का आयोजन किया गया। इस आयोजन में माहेश्वरी महिला जिला संगठन की 200 महिलाए %नारी का आभूषण है साड़ी% की थीम पर हेमंबरा मंदिर से लेकर दत्त मंदिर तक एक साथ कदम से कदम मिलाकर चलीं। इस दौरान समाज की लगभग 20 महिलाएं वीरांगनाओं के वेश में दिखाई दीं। कोई झांसी की रानी के रूप में सड़क पर चला, तो किसी ने अहिल्याबाई, रानी दुर्गावती और यहां तक मीराबाई का रूप भी धारण किया। इस वाकेथान के जरिए माहेश्वरी समाज की महिलाओं ने नारी जाति को साड़ी पहनने की संस्कृति को जीवित रखने का संदेश दिया। इस आयोजन के दौरान दत्त

मंदिर में इग्नू की सहायक डायरेक्टर डा. स्मृति भार्गव ने एक सामाजिक संदेश के बोर्ड का भी लोकार्पण किया, जिसमें सभी धर्मप्रेमियों के लिए अपने सांस्कृतिक परिधान पहनकर मंदिर में प्रवेश का अनुरोध किया गया। यहां पर कई महिलाओं ने देवस्थान और सामाजिक कार्यक्रमों में साड़ी पहन कर जाने का संकल्प लिया । कार्यक्रम में सामाजिक दायित्व का निर्वहन करते हुए गरीबों को 1101 चप्पल का वितरण किया गया। साथ ही गरीब जरूरतमंद महिलाओं को आजीविका चलाने हेतु नई सिलाई मशीनें भी भेंट की गई।

जल गंगा संवर्धन अभियान अंतर्गत नगरीय क्षेत्रों में कलश यात्रा एवं निबंध रंगोली प्रतियोगिता का हुआ आयोजन

जनप्रतिनिधियों एवं सामाजिक संगठनों ने की सहभागिता

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। कलेक्टर स्वरोचिष सोमवंशी के निर्देशन तथा अपर कलेक्टर राजेश शाही के मार्गदर्शन में सीधी जिले के नगरीय क्षेत्रों में संचालित जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत रविवार 09 जून को कलश यात्रा एवं निबंध/रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

नगर पालिका परिषद सीधी में फूलमती मंदिर सीधी से मूडी तालाब तक कलश यात्रा निकाली गयी जिसमे प्रमुख रूप से पार्षदगण रजनीश श्रीवास्तव, जमुना कोल, पूनम सोनी, बाबूलाल कुशवाहा, समाजसेवी विश्ववन्धुधर द्विवेदी के साथ-साथ सामाजिक संगठनों के सदस्य, नगरवासी, स्व सहायता समूह की महिलाए, जन अभियान परिषद के अधिकारी तथा नगर पालिका परिषद सीधी के मुख्य नगर पालिका अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

नगर परिषद मझौली में उदयभान यादव उपाध्यक्ष एवं हितेश गुप्ता पार्षद के अगुआई में आम नागरिकों सहयोग से प्राचीन देवी मंदिर एवं उसके परिसर के सफाई अभियान चलाया गया तथा कलश यात्रा निकली गयी। साथ ही स्कूल के बच्चों के द्वारा जल संरक्षण विषय पर आयोजित निबंध प्रतियोगिता में उत्साहपूर्वक भाग लिया गया।नगर परिषद रामपुर नैकिन में दसौधा तालाब के सफाई का कार्य किया गया तथा कलश यात्रा निकली गयी। इसी प्रकार नगर परिषद चुरहट मे कलश यात्रा एवं स्थानीय महिलाओं एवं बच्चो के द्वारा मनमोहक रंगोली बना का जल संरक्षित करने का संदेश दिया गया।

जिले के सभी नगरीय क्षेत्रो में जनप्रतिनिधियों, आम नागरिकों, स्वय सेवी संस्थाओं के सहयोग से दिनांक 05 जून विश्व पर्यावरण दिवस से 16 जून 2024 गंगा दशहरा तक पुराने तालाब, कुओं, बाबड़ियों, प्र्वाहित नदियों के सरंक्षण के लिए जल गंगा संवर्धन अभियान चलाया जा रहा है। कलेक्टर स्वरोचिष सोमवंशी एवं अपर कलेक्टर राजेश शाही द्वारा आम नागरिकों, स्वयंसेवी संस्थाओ से इस अभियान में शामिल होने की अपील की गयी है।

एनएचएआई अधिकारी के घर सीबीआई की दबिश

रात 8 बजे से लगातार पूछताछ की जा रही

मीडिया ऑडीटर, छतरपुर निप्र। छतरपुर के सिविल लाइन थाना अंतर्गत शनिवार देर शाम सीबीआई की पांच सदस्यों की टीम ने एनएचएआई के अधिकारी के घर दबिश दी। पूछताछ की जा रही है।

जानकारी के अनुसार, सिविल लाइन थाना क्षेत्र के फोर लाइन ब्रिज के पास एनएचएआई के ऑफिस में पदस्थ पीडी चौधरी के पन्ना रोड स्थित बजरंग नगर के सामने अंबेडकर नगर कॉलोनी में निवास पर शनिवार शाम 8 बजे पांच सदस्य सीबीआई की टीम पहुंची।

उन्हें हिरासत में लेकर लगातार पूछताछ कर रही है। कार्रवाई रविवार की दोपहर 1:00 तक जारी है।

फ्लिहाल इस कार्रवाई से जुड़े सभी अधिकारी-कर्मचारी मीडिया से बातचीत नहीं कर रहे हैं। उनका कहना है कि कार्रवाई अभी जारी है जैसे ही खत्म होती है पूरी जानकारी दी जाएगी।

नवनिर्वाचित सांसद बापू और अटल जी को अर्पित की श्रद्धांजलि

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। सीधी लोकसभा संसदीय क्षेत्र के नवनिर्वाचित सांसद क्षेत्र के ख्याति प्राप्त चिकित्सक डॉ राजेश मिश्रा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के शपथ ग्रहण के पूर्व , नई दिल्ली स्थित राजघाट एवं सदैव अटल पहुँचकर पूज्य बापू एवं भारत र% श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी को श्रद्धांजलि अर्पित कर नमन किया।

भाजपा जिला मीडिया प्रभारी सुरेंद्र मणि दुबे ने बताया कि नवनिर्वाचित सांसद डॉ राजेश मिश्रा प्रचंड मतों से लोकसभा संसदीय क्षेत्र का चुनाव जीतने के पश्चात केंद्रीय नेतृत्व के निर्देशानुसार इन दिनों राजधानी दिल्ली के प्रवास पर हैं। सासंद डॉक्टर मिश्रा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के शपथ ग्रहण समारोह में शामिल होने के लिए दिल्ली में है। इस दौरान नवनिर्वाचित सांसद डॉक्टर मिश्रा को पार्टी के केंद्रीय नेतृत्व एवं विभिन्न राज्यों से आए हुए सांसदों का भरपूर परिचय प्राप्त हो रहा है।

पानी के धोखे में पीया हेयर रिमूवल क्रीम

महिला ने जिला अस्पताल में भर्ती, पति ने पीड़िता के साथ मारपीट की

मीडिया ऑडीटर, छतरपुर निप्र। छतरपुर सिविल लाइन थाना अंतर्गत बृजपुर गांव में शनिवार की शाम एक महिला ने पानी के धोखे में जहरीला पदार्थ पी लिया। जिससे उसकी हालत गंभीर होने पर परिजनों से इलाज के लिए जिला अस्पताल में भर्ती कराया। इस बात की जानकारी महिला के पति को लगने पर पति अस्पताल पहुंचा और महिला के साथ मारपीट की।

जिस बात से नाराज मायके वालों ने महिला के पति को जमकर मारापीटा। जिसका वीडियो अस्पताल के बाहर खड़े लोगों ने मोबाइल में कैद कर लिया। मारपीट का यह वीडियो आप जमकर वायरल हो रहा है। वहीं महिला की हालत ठीक है। अस्पताल में उसका इलाज किया जा रहा है।

जानकारी के अनुसार, जिज्जी बाई पिता श्याम आदिवासी (23) निवास ए बृजपुरा की रहने वाली है। जिसकी शादी 1 साल पहले दतिया निवासी अब्दुल रईस के साथ हुई थी। कुछ समय पहले माता-पिता लड़की को मायके लेकर आए थे। शनिवार की शाम 5 बजे महिला को प्यास लगी और उसने घड़े से पानी पिया। जिससे उसकी तबीयत बिगड़ गई।

तभी परिवार के लोगों ने देखा कि घड़े के पास वीट क्रीम पड़ी हुई है। जिसे तत्काल इलाज के लिए जिला अस्पताल में 6 बजे भर्ती किया। उसके बाद ससुराल में फोन लगाकर रात 8 बजे जानकारी दी। ससुराल से पति अस्पताल में देखने के लिए रात 12 आया। उसने देखा कि महिला की नाक में नाली डाली हुई है।

जिस बात से नाराज होकर उसने महिला से मारपीट कर दी। जिस बात से महिला का भाई मोहित आदिवासी और परिवार के लोगों ने रात 1 बजे जीजा अब्दुल के साथ जमकर लात घूसों से मारपीट की। जिसका वीडियो अस्पताल में मौजूद लोगों ने अपने मोबाइल में कैद कर लिया। अब यह मारपीट का वीडियो सोशल मीडिया पर जमकर वायरल हो रहा है। हालांकि महिला जिला अस्पताल में भर्ती है। उसका इलाज किया जा रहा है। उसकी हालत पहले से आप ठीक बताई जा रही है।

जिला अस्पताल में भारतीय महिला ने बताया कि शादी के बाद वह अपने मायके में आई थी शनिवार की शाम उसे प्यास लगी और उसने घड़े से पानी पिया। जिससे उसकी तबीयत बिगड़ गई उसने बताया कि पता नहीं कैसे घड़े में वीट क्रीम चली गई। जिससे उसकी हालत खराब हो गई अब वह जिला अस्पताल में भर्ती है। उसका इलाज किया जा रहा है। जिला अस्पताल में भर्ती महिला के पिता स्याम आदिवासी ने बताया कि उसने अपनी बेटी जिज्जी बाई का विवाह 1 साल पहले दतिया निवासी अब्दुल के साथ की थी अब्दुल रोज दारू पीकर बेटी के साथ मारपीट करता है। जिस बात से नाराज होकर बेटी ने जहर खा लिया था।

ग्रामीण क्षेत्रों में तालाबों एवं जलसंरचनाओं के सुदृढ़ीकरण का कार्य जारी

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव के निर्देशानुसार ग्रामीण क्षेत्रों में जल गंगा संवर्धन अभियान अंतर्गत विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन कर ग्राम वासियों को जल संरक्षण के विषय में जागरूक किया जा रहा है।

ग्राम जनों को विभिन्न जल संरचनाओं के महत्व के बारे में बताया गया एवं जल संसद में जो ग्राम पंचायत की पुरानी बावड़ी तालाब कुआं इत्यादि स्रोत किसी वजह से अनुपयोगी हैं उन्हें उपयोगी बनाने हेतु जन सहयोग करने हेतु ग्राम जनों को प्रोत्साहित किया गया।

कार्यक्रम में कलश यात्रा, जल संसद एवं पुराने जल स्रोतों को पुनर्जीवित करने एवं नवीन जल संरचनाओं का सृजन करने बाबत चर्चाएं की जा रही हैं। नदी, नालों, चेक डैम आदि की साफ-सफाई तथा तालाबों के गहरीकरण का कार्य किया जा रहा है।

कार्यक्रम में जनप्रतिनिधियों, सामाजिक संगठनों, ग्राम वासियों द्वारा उत्साह के साथ सहभागिता की जा रही है।

वाटर पार्क के स्विमिंग पूल में डूबा बच्चा, मौत

छतरपुर में परिजनों के साथ नहाने गया था, संचालक और कर्मचारी पार्क बंद कर भागे

मीडिया ऑडीटर, छतरपुर निप्र। छतरपुर में वाटरलैंड पार्क के स्विमिंग पूल में डूबने से 9 साल के बच्चे की मौत हो गई। वह अपने परिजनों के साथ वहां नहाने गया था। एक घंटे बाद जब वह कहीं नहीं दिखा तो उसे ढूंढना शुरू किया गया। इस दौरान बच्चा डूबा मिला। हादसे के बाद पार्क का संचालक और अन्य कर्मचारी वाटर पार्क में ताला लगाकर फरार हो गए।

मामला ओरछा थाना क्षेत्र के महोबा रोड पर फोरलेन हाईवे पर बने वाटरलैंड पार्क का है। रविवार की सुबह पठापुर का रहने वाला नाथू उर्फबाबू पिता हरदेव रैकवार परिजनों के साथ यहां पहुंचा था। परिजनों ने उसके शव का पोस्टमार्टम नहीं करवाया। वे बॉडी को घर लेकर चले गए थे।

परिजनों ने नहीं कराया शव का पोस्टमार्टम: मृतक के चाचा बृजेंद्र रैकवार ने बताया कि रविववार सुबह हम लोग वाटर पार्क पर नहाने गए थे। नहाने के बाद जब हमें बच्चा कहीं भी नजर नहीं आया तो पार्क कर्मचारियों को बुलवाया। खोजबीन के दौरान भतीजा पानी में डूबा मिला। उसे निकालकर हम जिला अस्पताल पहुंचे। डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया।

पुलिस ने परिजनों को समझाया तब हुआ पोस्टमार्टम: सिटी कोतवाली थाना प्रभारी अरविंद कुजूर ने बताया कि महोबा रोड पर वाटर पार्क में कुछ परिवार और बच्चे नहाने गए थे। एक बच्चे की डूबने से मौत हो गई। परिजन अस्पताल से बॉडी सीधे घर लेकर चले गए थे। पुलिस की समझाइश के बाद बच्चे का पोस्टमार्टम कराया गया। मामला दर्ज कर लिया गया है। वाटर पार्क के संचालक की तलाश की जा रही हैं।

दो साल से वाटर पार्क हो रहा था संचालित: वाटर पार्क के संचालक का नाम मोहम्मद मुख्तार मंसूरी है। 2 साल से वह पार्क का संचालन कर रहा है।

चलते ट्रक में अचानक लगी आग

मीडिया ऑडीटर, सिंगरौली निप्र। रविवार शाम को एनसीएल बीना परियोजना के करीब 1 किमी पहले कोयले से भरे ट्रक के केबिन में अचानक आग लग गई। सूचना मिलने के बाद मौके पर पहुंची फायर बिग्रेड ने आग पर काबू पाया। घटना में कोई जनहानि नही हुई है। जानकारी के अनुसार रविवार शाम करीब 5 बजे शक्ति नगर से अनपरा की ओर जा रहे कोयले से भरे ट्रेलर के केबिन में अचानक आग लग गई। घटना के दौरान आग का दायरा धीरे-धीरे बढ़ने लगा और कुछ ही देर में बीच सड़क पर ट्रेलर का केबिन जल गया। हादसे के दौरान मुख्य मार्ग के दोनों ओर वाहनों की लंबी कतार लग गई। सूचना मिलते ही मौके पर पहुंची पुलिस और फायर बिग्रेड ने आग पर काबू पाया। इसके बाद पुलिस ने जाम हटाया।

प्राचीन तालाबों का हो रहा है जीर्णोद्धार

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। प्रदेश सरकार द्वारा चलायें जा रहे जल गंगा संवर्धन अभियान के अन्तर्गत जनपद पंचायत रामपुर नैकिन की अधिकांश ग्राम पंचायतों में विभिन्न जल स्त्रोतों एवं तालाबों की साफ-सफाई की जा रही है और पंचायत मद से जीर्णोद्धार भी किया जा रहा है। रविवार को समाज सेवी अखिलेश पाण्डेय, जनपद पंचायत रामपुर नैकिन के उपाध्यक्ष ऋषिराज मिश्रा, जनपद सीईओ राजीव तिवारी, जनपद सदस्य महेन्द्र सिंह भदौरिया, अरूण शेखर त्रिपाठी, उमानिवास मिश्रा, मनोज द्विवेदी, रामजी तिवारी, राजमणि द्विवेदी सहित सैकड़ों लोगों ने ग्राम पटना के प्राचीन तालाब में श्रमदान किये। इस अवसर पर जनपद पंचायत रामपुर नैकिन के मुख्य कार्यपालन अधिकारी राजीव तिवारी ने सभी ग्रामवासियों को जल संवर्धन करने की शपथ दिलवाई और कहा कि आज हमारे यहां जल स्तर नीचे गिरता जा रहा है। उसे ऊपर उठाने की जिम्मेदारी हम सबकी है। उन्होंने ने कहा कि हम सब जमीन के नीचे से पानी निकालते किन्तु जब तक पानी नीचे है तभी तक ना। इस कारण हम सबको पानी की बचत भी करनी होगी। इस दौरान ऋषिराज मिश्रा उपाध्यक्ष जनपद पंचायत रामपुर नैकिन ने कहा कि हमारे गांव के प्राचीन तालाब का गहरी करण व सौंदर्यीकरण किया जायेगा और तालाब में जो सरपट है उसको साफ करा कर सुन्दर बनाया जायेगा। इस दौरान राजकुमारी पांव, सरपंच, हीरामणि पाण्डेय, गोमती प्रसाद मिश्रा, अशोक मिश्रा, युवराज सिंह, नागेन्द्र मिश्रा, शिवेन्द्र कुमार मिश्रा, रजनीश द्विवेदी, शुभम सोनी, रमाकांत मिश्रा, अखिलेश मिश्रा, कृष्णानंद तिवारी, निराशा मिश्रा, राजकुमारी कोल, मानवती कोल, शिवशंकर मिश्रा, दीपक पाण्डेय, लवकेश मिश्रा, सुखीनंद विश्वकर्मा, अनुपम मिश्रा, सनी मिश्रा, प्रदीप मिश्रा, भोला केवट, अभिषेक मिश्रा, राघव प्रसाद मिश्रा, निर्भय द्विवेदी आदि सैकड़ों लोगो ने तालाब के साफ-सफाई में सहभागिता निभाई। प्राचीन तालाबों के जीर्णोद्धार एवं साफ-सफाई हो जाने के बाद निश्चित ही बरसात के दिनों में बारिश होने पर यहां काफी जल भराव होगा और इंशानों के साथ ही जीव-जंतुओं के लिए भी यह उपयोगी साबित होगा।

जन भागीदारी की दिखी अनूठी मिशाल: प्रदेश सरकार द्वारा चलायें जा रहे जल गंगा संवर्धन अभियान का क्रियान्वयन सीधी जिले में कलेक्टर स्वरोचिष सोमवंशी एवं जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी राहुल धोटे के मार्गदर्शन में किया जा रहा है। प्राचीन तालाबों एवं नदियों के साफ-सफाई को लेकर जन भागीदारी की अनूठी मिशाल देखने को मिल रही है। क्षेत्रीय लोग पूरे उत्साह के साथ साफ-सफाई के कार्यक्रम में भाग ले रहे हैं। उनके द्वारा प्राचीन तालाबों एवं नदियों की सफाई के लिए मलबे को बाहर निकाला जा रहा है। जिससे जल पूरी तरह से स्वच्छ हो सके। कई स्थानों में बड़े पैमाने पर जलाशयों में खरपतवार एवं प्लास्टिक की सामग्री भी मिल रही है जिसको बाहर निकाला जा रहा है। यदि जलाशयों की साफ-सफाई को लेकर इसी तरह जन भागीदारी बनी रहे तो निश्चित ही आने वाले दिनों में इसके सुखद परिणाम सामने आ सकते हैं।

जैन मंदिर के पास रोज शाम टकराते जाम

कलेक्ट्रेट के सामने 200 मीटर की दूरी पर हो रहा खेल, शाम होते ही महिलाओं में भय का माहौल

मीडिया ऑडीटर, छतरपुर निप्र। जिला मुख्यालय की सिटी कोतवाली थाना अंतर्गत में मेला ग्राउंड में रोज शाम को आसामाजिक तत्वों का डेरा जमा हो जाता है आसामाजिक तत्व मेला ग्राउंड में महिलाओं के साथ बैठकर दारू पीते नजर आते हैं तो कभी झगड़ने और मारपीट करते नजर आते हैं इसके पहले कई घटना सामने आ चुकी है।

यह घटनाएं कलेक्ट्रेट परिसर के सामने 200 मीटर की दूरी पर जैन मंदिर के पास होती है जैन मंदिर शहर के जैन समाज के लिए प्रसिद्ध मंदिर है। यहां समाज के लोग रोज शाम और सुबह भगवान के दर्शन करने पहुंचते हैं लेकिन इन आसामाजिक तत्वों के कारण अब यहां का माहौल खराब हो गया है। जिस कारण से इस जैन मंदिर में श्रद्धालुओं की संख्या प्रति दिन कम होती जा रही है। ऐसी ही एक मामला शनिवार की देर रात सामने आया है, जब आधा दर्जन व्यक्ति के साथ एक महिला मेला ग्राउंड में बैठकर दारू के जाम टकराती नजर आ रही है। जिसका वीडियो सोशल मीडिया पर जमकर वायरल हो रहा है।

जानकारी के अनुसार जिला मुख्यालय में कलेक्ट्रेट के सामने 200 मीटर की दूरी पर मेला ग्राउंड में जैन समाज का जैन मंदिर स्थापित है जहां पर शहर से सैकड़ों भक्ति मंदिर में दर्शन करने शाम सुबह पहुंच सकते हैं लेकिन कुछ समय से मेला ग्राउंड रोज शाम को असामाजिक तत्वों का डेरा जमा हो जाता है।

जिससे मंदिर में आप श्रद्धालु काम पहुंच रहे हैं क्योंकि मेला ग्राउंड में मारपीट गाली गलौज और चोरी चपाती की घटना बढ़ती जा रही है इसके पहले भी मेला ग्राउंड के मारपीट और गाली गलौज सहित दारु पीने के वीडियो वायरल हो चुके हैं लेकिन पुलिस प्रशासन हाथ पैर हाथ रखकर केवल तमाशा देखती रहती है ऐसा एक वीडियो शनिवार की रात 11 बजे आधा दर्जन लोगों के साथ बैठकर एक महिला दारू के जाम लड़ते नजर आ रही है और दारु पीने के बाद नशे में आसामाजिक तत्वों के बीच में विवाद के चलते आपस मे गाली गलौज की जा रही थी

इसी बीच मेला ग्राउंड में मौजूद लोगों ने दारु पीने और गाली गलौज करते हुए झगड़ने का वीडियो मोबाइल में कैद कर लिया उसके बाद लोगों ने वह वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल कर दिए जो अब शहर में चर्चा का विषय बन चुका हैं यह सब घटना मेला ग्राउंड में रखी चाय गुटखा की दुकानों पर बैठकर सामाजिक तत्वों के द्वारा की जाती है ,दुकानदार इन असामाजिक तत्वों का सपोर्ट करते हैं और उन्हें बैठने के लिए जगह देते हैं जिससे दुकानदारों की भी मोटी कमाई होती है।

सिटी कोतवाली थाना प्रभारी अरविंद कुजूर ने बताया कि मेला ग्राउंड में असामाजिक तत्वों के द्वारा दारू पीना और घटना को अंजाम देने की जानकारी आपके माध्यम से लगी है। मैं आज यानी रविवार शाम को पुलिस टीम को भेज कर कार्यवाही करवाता हूं।

विचार

सत्ता को संदेश देने शांतिपूर्ण ढंग से जनता ने किया बदलाव

भारत के पूर्व उपराष्ट्रपति, पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के मंत्रिमंडल में शामिल एम वेंकैया नायडू ने कहा है कि नागरिकों को जो बदलाव करना था, जनता ने लोकसभा चुनाव के जरिए शांतिपूर्ण ढंग से बदलाव किया है। नायडू ने कहा, लोकसभा के चुनाव ने यह साबित कर दिया है कि भारत एक महान लोकतांत्रिक देश है। सभी को समझ लेना चाहिए, दुनिया के देशों में भारत को एक महान लोकतंत्र क्यों कहा जाता है। भारत के करोड़ों लोगों ने शांतिपूर्ण ढंग से मतदान किया, जनता जो बदलाव चाहती थी। शांतिपूर्ण तरीके से अंजाम तक पहुंचाने का काम जनता ने किया है। नायडू ने स्पष्ट रूप से कहा, चुनाव के जरिए जनता ने बड़ा संदेश दिया है। उन्होंने कहा, मुझे उम्मीद है सत्ता में बैठे हुए लोग इस संदेश को समझेंगे। वेंकैया नायडू ने गुजरात के आणंद में ग्रामीण प्रबंधन संस्थान के 43 में दीक्षांत समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित कर रहे थे। यहां नायडू ने कहा, कि सत्तारूण भाजपा अपने दम पर बहुमत के आंकड़े तक पहुंचने में विफल साबित हुई है। वहीं इंडिया गठबंधन ने प्रभावशाली ढंग से जनता की बात को इस चुनाव मैदान में जनता के सामने रखा। जनता का समर्थन इंडिया गठबंधन को मिला। पूर्व उपराष्ट्रपति वेंकैया नायडू ने संबोधन के जरिए भाजपा को बहुत बड़ा संदेश भी दिया है। राजनीतिक दलों की सर्वोच्च प्राथमिकता गरीबों और वंचितों के लिए काम करना होनी चाहिए। चुनाव की जीत हार से अलग सोचते हुए, राजनीतिक दलों को गरीबों और वंचितों के लिए महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करना चाहिए। उन्होंने कहा, भारत की 60 फ़ीसदी आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है। यह 60 फ़ीसदी आबादी कृषि, मवेशी प्रजनन, मत्स्य पालन, डेयरी फार्मिंग, स्थानीय कामगार एवं रिटेल कारोबार से जुड़ी रहती है। वेंकैया नायडू जनता से जुड़े हुए राजनेता हैं। वह भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष भी रह चुके हैं। अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार में वह केंद्रीय मंत्री के पद पर भी रहे हैं। उन्होंने उपराष्ट्रपति पद पर रहते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रथम कार्यकाल में काफी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया था। उन्होंने राज्यसभा के उपसभापति के रूप में भाजपा और सत्ता की सोच को बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की थी। सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच में भी उन्होंने समन्वय बनाने का काम किया था। भारतीय जनता पार्टी में पिछले 10 वर्षों में जिस तरह से सत्ता एवं संगठन में बदलाव आया है। संगठन और सत्ता की सोच बदल गई है। मोदी सरकार की इमेज पूंजीपतियों की सरकार के रूप में बन गई है। सत्ता में बने रहने की सोच ने भाजपा की रीति-नीति को बदल दिया है। एक समय था, जब राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और उसके अनुवांशिक संगठन तथा भाजपा स्वदेशी जागरण मंच जैसे कार्यक्रम को संचालित करती थी। 2004 से 2014 तक विदेशी निवेश को भारत में आने से रोकने के लिए बड़े-बड़े आंदोलन चलाए। सदन में जिस लड़ाई को लड़ा था। विशेष रूप से रिटेल सेक्टर में विदेशी निवेश को नहीं आने दिया था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार बनने के बाद विदेशी निवेश के लिए सभी सेक्टर में 100 फ़ीसदी निवेश की मंजूरी दे दी गई। उसके बाद तेजी से हालात बदलने शुरू हुए। भारत का सारा आर्थिक और सामाजिक ताना-बाना बिगड़ गया। गरीब-गरीब होते चले गए। अमीर-अमीर होते चले गए। इस परिवर्तन पर पूर्व उपराष्ट्रपति वेंकैया नायडू ने भाजपा और अन्य राजनीतिक दलों को आईना दिखाया है। उनका कहना है, चुनाव में जीत-हार कोई मायने नहीं रखती है। राजनीति में धन की कोई महत्वपूर्ण भूमिका नहीं होती है, यदि जनमत साथ में नहीं है। ऐसी स्थिति में राजनीति में धनबल की कोई भूमिका नहीं होती है। राजनीति नागरिकों के आर्थिक एवं सामाजिक रूप से उत्थान के लिए की जाती है। जो राजनीतिक दल इस काम को करता है उसी का राजनीतिक भविष्य होता है।

आर्थिक विकास के दृष्टि से वित्तीय वर्ष 2023-24 भारत के लिए महत्वपूर्ण साबित हुआ

हाल ही में वित्तीय वर्ष 2023-24 के दौरान भारतीय अर्थव्यवस्था में हुए विकास से सम्बंधित आंकड़े जारी किये गए है। इसके अनुसार वित्तीय वर्ष 2023-24 में भारत के सकल घरेलू उत्पाद में 8.2 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है जबकि वित्तीय वर्ष 2022-23 में भारत की आर्थिक विकास दर 7 प्रतिशत की रही थी। भारतीय रिजर्व बैंक एवं वैश्विक स्तर पर कार्यरत विभिन्न वित्तीय संस्थानों ने वित्तीय वर्ष 2023-24 में भारत की आर्थिक विकास दर का अनुमान लगाते हुए कहा था कि यह 7 प्रतिशत के आसपास रहेगी। परंतु, वित्तीय 2023-24 के दौरान भारत की आर्थिक विकास दर इन अनुमानों से कहीं अधिक रही है। वित्तीय वर्ष 2023-24 की चौथी तिमाही में भी भारत की आर्थिक विकास दर 7.8 प्रतिशत रही है जो पिछले वित्तीय वर्ष की चौथी तिमाही में 6.1 प्रतिशत रही थी। पूरे विश्व में प्रथम 10 सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं की आर्थिक विकास दर भारत की आर्थिक विकास दर के कहीं आसपास भी नहीं रही है।

अमेरिका की आर्थिक विकास दर 2.3 प्रतिशत, चीन की आर्थिक विकास दर 5.2 प्रतिशत, जर्मनी की आर्थिक विकास दर तो ऋणात्मक 0.3 प्रतिशत रही है। जापान की आर्थिक विकास दर 1.92 प्रतिशत, ब्रिटेन की 0.1 प्रतिशत, फ्रान्स की 0.9 प्रतिशत, ब्राजील की 2.91 प्रतिशत, इटली की 0.9 प्रतिशत एवं कनाडा की 1 प्रतिशत रही है, वहीं भारत की आर्थिक विकास दर 8.2 प्रतिशत रही है। 8 प्रतिशत से अधिक की विकास दर को देखते हुए अब तो ऐसी सम्भावना व्यक्त की जा रही है कि वर्ष 2027 तक जर्मनी एवं जापान की अर्थव्यवस्थाओं को पीछे छोड़ते हुए भारत विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था निश्चित ही बन जाएगा।

विनिर्माण, खनन, भवन निर्माण एवं सेवा क्षेत्र, यह चार क्षेत्र ऐसे हैं जो भारत के सकल घरेलू उत्पाद को तेजी से आगे बढ़ाने में अपना विशेष योगदान देते हुए नजर आ रहे हैं। यह स्पष्ट रूप से केंद्र सरकार की आर्थिक नीतियों के चलते ही सम्भव हो पा रहा है।

वास्तविक सकल मान अभिवृद्धि के आधार पर, वित्तीय वर्ष 2023-24 की चतुर्थ तिमाही में विनिर्माण के क्षेत्र में 8.9 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज हुई है जबकि वित्तीय वर्ष 2022-23 की इसी अवधि में केवल 0.9 प्रतिशत की वृद्धि दर हासिल की जा सकी थी। इसी प्रकार, खनन के क्षेत्र में भी इस वर्ष की चतुर्थ तिमाही में वृद्धि दर 4.3 प्रतिशत की रही है जो पिछले वर्ष इसी अवधि में 2.9 प्रतिशत की रही थी। भवन निर्माण के क्षेत्र में 8.7 प्रतिशत की वृद्धि दर हासिल की गई है जो पिछले वर्ष इसी अवधि में 7.4 प्रतिशत की रही थी। नागरिक प्रशासन, सुरक्षा एवं अन्य सेवाओं के क्षेत्र में वृद्धि दर 4.7 प्रतिशत से बढ़कर 7.8 प्रतिशत हो गई है। ऊर्जा उत्पादन क्षेत्र में वृद्धि दर पिछले वर्ष की चौथी तिमाही में 7.3 प्रतिशत से बढ़कर इस वर्ष चौथी तिमाही में 7.7 प्रतिशत पर पहुंच गई है। परंतु, कृषि, सेवा एवं वित्तीय क्षेत्र में वित्तीय वर्ष 2023-24 की चौथी तिमाही में वृद्धि दर पिछले वर्ष की इसी तिमाही की तुलना में कुछ कम रही है।

वैश्विक स्तर पर अन्य देशों के सकल घरेलू उत्पाद में लगातार कम हो रही वृद्धि दर के बावजूद भारत के सकल घरेलू उत्पाद में तेज गति से वृद्धि दर का होना यह दर्शाता है कि अन्य देशों की अर्थव्यवस्थाओं में आ रही परेशानियों का असर भारतीय अर्थव्यवस्था पर नहीं के बराबर हो रहा है एवं भारतीय अर्थव्यवस्था अपनी आंतरिक शक्ति के बल पर तेज गति से आर्थिक वृद्धि करने में सफल हो रही है।

परंतु, भारत में कुछ क्षेत्र ऐसे भी हैं जिन पर, आर्थिक विकास की गति को और अधिक तेज करने के उद्देश्य से विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। जैसे, हाल ही के समय में भारत में निजी खपत नहीं बढ़ पा रही है और यह 4 प्रतिशत की दर पर ही टिकी हुई है। साथ ही, निजी क्षेत्र में पूंजी निवेश भी नहीं बढ़ पा रहा है। भारत में निजी खपत कुल सकल घरेलू उत्पाद का 60 प्रतिशत है। यदि सकल घरेलू उत्पाद के इतने बड़े हिस्से में वृद्धि नहीं होगी अथवा कम वृद्धि दर होगी तो देश में सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि दर भी विपरीत रूप से प्रभावित होगी। भारत में निजी खपत इसलिए भी नहीं बढ़ पा रही है क्योंकि वित्तीय वर्ष 2022-23 में घरेलू देयताएं सकल घरेलू उत्पाद के 5.7 प्रतिशत के उच्चत्तम स्तर पर पहुंच गई हैं एवं बचत की दर भी सकल घरेलू उत्पाद के 5.2 प्रतिशत पर अपने निचले स्तर पर आ गई है, जो 10 वर्ष पूर्व 7 प्रतिशत से अधिक थी।

वहीं दूसरी ओर, दिसम्बर 2023 के प्रथम सप्ताह में भारत ने फ्रान्स एवं ब्रिटेन को पीछे छोड़ते हुए शेयर बाजार के पूंजीकरण के मामले में पूरे विश्व में पांचवा स्थान हासिल कर लिया था। भारत से आगे केवल अमेरिका, चीन, जापान एवं हांगकांग थे। परंतु, केवल दो माह से भी कम समय में भारत ने शेयर बाजार के पूंजीकरण के मामले में हांगकांग को पीछे छोड़ते हुए विश्व में चौथा स्थान प्राप्त कर लिया है। भारतीय शेयर बाजार का पूंजीकरण 4.35 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर से भी अधिक का हो गया है। अब ऐसा आभास होने लगा है कि भारत अर्थ के क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा को पुनः प्राप्त करता हुआ दिखाई दे रहा है। भारत में नैशनल स्टॉक एक्स्चेंज पर लिस्टेड समस्त कम्पनियों के कुल बाजार पूंजीकरण का स्तर 2 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर के स्तर पर जुलाई 2017 में पहुंचा था और लगभग 4 वर्ष पश्चात अर्थात मई 2021 में 3 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर के स्तर को पार कर गया था तथा केवल लगभग 2.5 वर्ष पश्चात अर्थात दिसम्बर 2023 में यह 4 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर के स्तर को भी पार कर गया था और अब यह 4.35 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर के स्तर से भी आगे निकल गया है। इस प्रकार भारत शेयर बाजार पूंजीकरण के मामले में आज पूरे विश्व में चौथे स्थान पर आ गया है।

प्रथम स्थान पर अमेरिकी शेयर बाजार है, जिसका पूंजीकरण 50.86 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर से अधिक है। द्वितीय स्थान पर चीन का शेयर बाजार है जिसका पूंजीकरण 8.44 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर से अधिक है। वर्ष 2023 में चीन के शेयर बाजार ने अपने निवेशकों को ऋणात्मक प्रतिफल दिए हैं। तीसरे स्थान पर जापान का शेयर बाजार है जिसका पूंजीकरण 6.36 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर से अधिक है। चौथे स्थान पर भारत का शेयर बाजार है जिसका पूंजीकरण 4.35 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर से अधिक है। पांचवे स्थान पर हांगकांग का शेयर बाजार है जिसका पूंजीकरण 4.29 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर है। जिस तेज गति से भारतीय शेयर बाजार का पूंजीकरण आगे बढ़ रहा है, अब ऐसी उम्मीद की जा रही है कि कुछ समय पश्चात ही भारतीय शेयर बाजार का पूंजीकरण जापान शेयर बाजार के पूंजीकरण को पीछे छोड़ते हुए पूरे विश्व में तीसरे स्थान पर आ जाएगा।

उक्त सफलताओं के साथ ही, भारत ने अपने आर्थिक विकास की दर को तेज रखते हुए अपने राजकोषीय घाटे पर भी नियंत्रण स्थापित कर लिया है। वित्तीय वर्ष 2022-23 में भारत का राजकोषीय घाटा 17 लाख 74 हजार करोड़ रुपए का रहा था जो वित्तीय वर्ष 2023-24 में घटकर 16 लाख 54 हजार करोड़ रुपए का रह गया है। यह राजकोषीय घाटा वित्तीय वर्ष 2022-23 में 5.8 प्रतिशत था जो वित्तीय वर्ष 2023-24 में घटकर 5.6 प्रतिशत रह गया है। भारत के राजकोषीय घाटे को वित्तीय वर्ष 2024-25 में 5.1 प्रतिशत एवं वित्तीय वर्ष 2025-26 में 4.5 प्रतिशत तक नीचे लाने के प्रयास केंद्र सरकार द्वारा सफलता पूर्वक किए जा रहे हैं। अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रान्स, जर्मनी जैसे विकसित देश भी अपने राजकोषीय घाटे को कम नहीं कर पा रहे हैं परंतु भारत ने वित्तीय वर्ष 2023-24 के दौरान यह बहुत बड़ी सफलता हासिल की है। सरकार का खर्च उसकी आय से अधिक होने पर इसे राजकोषीय घाटा कहा जाता है। केंद्र सरकार ने खर्च पर नियंत्रण किया है एवं अपनी आय के साधनों में अधिक वृद्धि की है। यह लम्बे समय में देश के आर्थिक स्वास्थ्य की दृष्टि से एक बहुत महत्वपूर्ण तथ्य उभरकर सामने आया है।

जंग ए आजादी और बिरसा मुंडा का उलगुलान

हमारे स्वतंत्रता सेनानियों के सर्वोच्च बलिदान और निस्वार्थ भावना ने इतिहास के पन्नों पर अपनी पहचान दर्ज की है। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन लिखित इतिहास का लिखित हिस्सा है परंतु असंख्य ऐसे निस्वार्थ साहसी स्वतंत्रता सेनानी भी रहे हैं जिनका योगदान उजागर नहीं हुआ या जिनकी अनदेखी की गई। इन नायकों को याद किए बिना भारत के स्वतंत्रता आंदोलन की कहानी को पूर्ण रूप नहीं दिया जा सकता। स्वतंत्रता संग्राम में जनजाति नायकों के योगदान को कभी भी भुलाया नहीं जा सकता है। निसंदेह जनजातीय प्रतिरोध आंदोलन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का अभिन्न अंग था। भारतीय इतिहासकारों ने 1857 की क्रांति को स्वतंत्रता संग्राम का प्रथम आंदोलन बताया है। वास्तव में 1857 से 100 साल पहले ही आदिवासियों ने आजादी के आंदोलन का बिगुल फूंक दिया था। 1857 की क्रांति से पहले 1780 में संथाल में तिलका मांझी के नेतृत्व में दामिन संग्राम लड़ा गया। 1830-32 में बुधू भगत के नेतृत्व में देश लरका आंदोलन का गवाह बना। 1855 में आजादी की यही ज्वाला सिधु-कान्हू क्रांति के रूप में जल उठी।

मौत के मुहाने पर लाखों शहरी महिलाएं

-सीमा अग्रवाल

द लैंसेट कमीशन के विशेषज्ञों ने चिंता जताते हुए कहा है कि स्तन कैंसर से 2040 तक हर साल दस लाख लोगों की मौत होने की आशंका है। अभी भी हर साल 6-7 लाख महिलाओं की इस कैंसर के कारण जान जा रही है, इन आंकड़ों के और भी बढने का खतरा है। हालिया अध्ययनों में ड्क्षचता जताई गई है कि महिलाओं में ब्रेस्ट कैंसर जिस गति से बढ़ता जा रहा है ऐसे में आशंका है कि साल 2040 तक इसके मामले और मृत्यु का खतरा कई गुना और अधिक हो सकता है। ग्रामीण महिलाओं की बजाय शहरी महिलाओं में स्तन कैंसर का खतरा 10 गुना ज्यादा है। भारत में महिला-पुरुष दोनों में कैंसर और इसके कारण होने वाली मौतों के मामले तेजी से बढ़ रहे हैं। स्तन कैंसर अब दुनिया नहीं बल्कि भारत के लिए बड़ी चुनौती बन चुका है। अस्पतालों में आ रहे मरीजों की लंबी कतारें इसकी गवाह हैं। वहीं स्वास्थ्य विभाग के आंकड़े महिलाओं की तरफ ब्रेस्ट कैंसर के बहाने बढ़ती मौत की कहानी बता रही हैं। लैंसेट कमीशन की हालिया जारी रिपोर्ट में कहा गया कि साल 2020 के अंत तक 5 वर्षों में लगभग 7.8 मिलियन (78 लाख से अधिक) महिलाओं में स्तन कैंसर का निदान किया गया और लगभग 6.85 लाख महिलाओं की इस बीमारी से मृत्यु हो गई। आयोग का अनुमान है कि वैश्विक स्तर पर स्तन कैंसर के मामले 2020 में 23 लाख से बढ़कर साल 2040 तक 30 लाख से अधिक हो सकते हैं। अमरीका के एमोरी यूनिवर्सिटी स्कूल ऑफ मैडीसिन में प्रोफैसर और शोधकर्त्ता रेशमा जागसी कहती हैं, महिलाओं को इस बढ़ती स्वास्थ्य समस्या को लेकर सावधानी बरतनी जरूरी है। इसके लिए जागरूकता अभियान भी बहुत आवश्यक है, जिससे समय पर इसके जोखिमों की पहचान करने में मदद मिल सके। रिसर्च का मानना है 2040 तक इस बीमारी से होने वाली मौतों का जोखिम प्रति वर्ष दस लाख से अधिक हो सकता है। स्वास्थ्य विशेषज्ञों ने बताया, भारतीय महिलाओं में भी स्तन कैंसर का जोखिम लगातार बढ़ता जा रहा है क्योंकि ब्रेस्ट कैंसर का सबसे बड़ा खतरा निम्न और मध्यम आय वाले देशों में देखा जा रहा है, जहां महिलाएं असाधारण रूप से इससे प्रभावित हो रही हैं। **स्मोकिंग, शराब का चलन बड़ा कारण:** विशेषज्ञों के अनुसार ब्रेस्ट कैंसर के शहरी महिलाओं में तेजी से बढने का बड़ा कारण धूम्रपान और मद्यपान है। शहरों में पुरुषों के साथ महिलाओं में भी धूम्रपान करना और शराब पीना एक संस्कृति बन चुका है। महिलाएं इसे स्टेटस सिंबल का नाम देती हैं। वो नहीं जानतीं कि उनकी ये च्वाइस उनके शरीर से खिलवाड़ है। अध्ययनों में पाया गया है कि शराब और धूम्रपान के कारण भी स्तन कैंसर का खतरा हो सकता है, इन आदतों से दूरी बनाकर भी स्तन कैंसर के जोखिमों को कम किया जा सकता है। बिगड़ता लाइफस्टाइल, बढ़ता हुआ वजन और ओवरवेट महिलाओं में ब्रेस्ट कैंसर का बड़ा खतरा है।

दोबारा ब्रेस्ट कैंसर होना बड़ा खतरा, ज्यादा घातक : 50 से कम उम्र की महिलाओं में 86 प्रतिशत तक दोबारा ब्रेस्ट कैंसर होने का खतरा बढ़ जाता है। दरअसल कैंब्रिज विश्वविद्यालय के एक अध्ययन में ये आंकड़े सामने आए हैं जो बताते हैं कि 50 साल से कम उम्र की जिन महिलाओं में एक बार ब्रेस्ट कैंसर का इलाज हो चुका है उनमें दूसरी बार कैंसर होने का खतरा 86 प्रतिशत बढ़ जाता है। जो महिलाएं पहले ब्रेस्ट कैंसर का इलाज करा चुकी हैं वह इसके रिपीट होने की शिकार कभी भी हो सकती हैं। वहीं, दूसरी जगह पहले इसका इलाज करा चुकी 50 साल से ज्यादा उम्र की महिलाओं में ब्रेस्ट कैंसर होने की आशंका 17 प्रतिशत से ज्यादा है। **क्या महिलाएं ब्रेस्ट कैंसर पर काबू पा सकती हैं :** ब्रेस्ट कैंसर पर काबू पा लिया जाए ऐसा अभी संभव नहीं है। लेकिन यह जरूर है कि सावधानी बरत कर और सजग रहते हुए ब्रेस्ट कैंसर से बचा जा सकता है। इसके खतरे को कम किया जा सकता है। ब्रेस्ट कैंसर को लेकर स्वास्थ्य विशेषज्ञों और रिसर्च एजेंसियों दोनों की स्पष्ट सलाह है कि कम उम्र से ही महिलाओं, बच्चियों को ब्रेस्ट कैंसर के प्रति जागरुक किया जाए। उन्हें ब्रेस्ट कैंसर को लेकर शुरूआत से ही सावधानी बरतने की सलाह दी जाए, तो इसके खतरे कई गुना कम हो सकते हैं। कैंसर विशेषज्ञ सलाह देते हैं कि महिलाओं द्वारा स्तन की नियमित रूप से जांच कराने, अपने जोखिम कारकों की पहचान और बचाव के लिए उपाय करते रहना इस कैंसर की रोकथाम की दिशा में महत्वपूर्ण हो सकता है। फिलहाल जिस प्रकार के वैश्विक रुझान देखे जा रहे हैं ऐसे में आशंका है कि इस कैंसर के मामले स्वास्थ्य विभाग पर बड़े दबाव का कारण बन सकते हैं। ब्रेस्ट कैंसर के जोखिम को कम करने के लिए जागरुकता अभियानों की बहुत जरूरत है। ये अभियान समय-समय पर नहीं बल्कि रैगुलर बेसिस पर चलने चाहिएं। स्कूलों, कॉलेजों, ऑफिसों, पब्लिक प्लेस पर इसकी बात होनी चाहिए। समय-समय पर कैंसर की स्क्रीनिंग को बढ़ावा देने के लिए भी लोगों को शिक्षित किया जाना चाहिए जिससे कि समस्या का समय रहते निदान किया जा सके।

पत्नी की हत्या के बाद लाश के पास सोता रहा

गरियाबंद में सुबह ससुर ने देखी बहू की लाश, माथे से निकल रहा था खून

गरियाबंद एजेंसी। छत्तीसगढ़ के गरियाबंद में आपसी विवाद में पति ने पत्नी की हत्या कर दी। मर्डर के बाद उसी कमरे में लाश के पास रात भर सोता रहा। सुबह जब पिता ने कमरे का दरवाजा खुलवाया तो बहू खून से लथपथ पड़ी मिली। मामला फिंगेश्वर थाना क्षेत्र का है।

मिली जानकारी के मुताबिक वार्ड क्रमांक 12 में रहने वाले चेतन बंजारे की पत्नी पूर्णिमा बंजारे (37) की रविवार सुबह खून से सनी लाश मिली है। मृतका के ससुर घुरऊ बंजारे ने बताया कि आए दिन बेटा और बहू के बीच विवाद होते रहता था। बीती रात भी विवाद हुआ था।

बेटे के चेहरे पर खून के दाग: उन्होंने बताया कि सुबह लकड़ी लाने जंगल जाने के लिए बेटे को उठाया तो उसके चेहरे पर खून के दाग दिखा। ऐसे में उसे शक हुआ। अंदर कमरे में जाकर देखा तो पैरों तले जमीन खिसक गई। बहू बेसुध पड़ी थी। फर्श पर खून ही खून बिखरा पड़ा था।

बहू के सिर से खून बह रहा था: आरोपी के पिता ने बताया कि बहू के सिर पर वार किया है। सिर से खून बह रहा था। चेहरे और पैर में भी चोट के निशान मिले हैं। घटना से खबराए बुजुर्ग पिता ने फिंगेश्वर थाने में इसकी शिकायत दर्ज कराई, जिसके बाद थाना प्रभारी फैजुल शाह की टीम मौके पर पहुंची।

पति को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही: थाना प्रभारी फैजुल शाह ने बताया कि लाश को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया है। पति को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है। पुलिस जल्द मामले का खुलासा करेगी। मामले की जांच जारी है।

आज जॉब फेयर, 75 पदों पर भर्ती

8वीं से लेकर ग्रेजुएट कैंडिडेट हो सकेंगे शामिल, टेलीकॉलर, टेक्नीशियन जैसे पद

मीडिया ऑडीटर, रायपुर एजेंसी। रायपुर में सोमवार (10 जून) को जॉब फेयर का आयोजन किया जा रहा है। यह आयोजन जिला रोजगार एवं स्वरोजगार मार्गदर्शन केंद्र में होगा। इसके जरिए प्राइवेट क्षेत्र की कंपनी में टेलिकॉलर से लेकर टेक्नीशियन तक के 75 पद शामिल हैं। भर्ती होने वाले लोगों को न्यूनतम 10 हजार से 14 हजार 500 रुपए तक सैलरी दी जाएगी। जानकारी के मुताबिक न्यूनतम 8वीं पास से लेकर ग्रेजुएट हो चुके कैंडिडेट इस भर्ती में शामिल हो सकते हैं। जॉब फेयर में वेटर, हैल्पर, टेक्नीशियन, सोलर टेक्नीशियन, सेल्स एग्जीक्यूटिव पद हैं। इसमें शामिल होने के लिए सुबह 11 बजे से 2 बजे तक अपने बायोडाटा और आधार कार्ड के लेकर पहुंचना होगा।

ये दस्तावेज लाने होंगे: जिला रोजगार एवं स्वरोजगार मार्गदर्शन केन्द्र के अधिकारियों ने बताया कि रोजगार मेला में शामिल होने वाले योग्य एवं इच्छुक आवेदक को बायोडाटा, आधार कार्ड एवं शैक्षणिक, तकनीकी योग्यता प्रमाण पत्रों की फोटो कॉपी के साथ उपस्थित होना होगा। अधिक जानकारी के लिए आवेदक जिला रोजगार कार्यालय रायपुर में भी संपर्क कर सकते हैं।

आचार संहिता हटने के बाद पहला रोजगार मेला: आचार संहिता हटने के बाद रायपुर में यह पहला रोजगार मेला आयोजित किया गया है। जिला रोजगार कार्यालय के अधिकारियों ने बताया कि आने वाले दिनों में प्राइवेट सेक्टर में बहुत सारी वैकेंसी आनी है जिसके लिए जॉब फेयर का आयोजन किया जाएगा।

आग-धुंआ उगल रही कोल नगरी

ओपन कास्ट खदान में 4 से धधक रही आग, जहरीले धुएं से 30 हजार लोग परेशान

मनेंद्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर एजेंसी। छत्तीसगढ़ के चिरमिरी ओपन कास्ट की माइंस में 3 से 4 दिन से लगी आग धीरे-धीरे बेकाबू हो रही है, लेकिन एसईसीएल प्रबंधन इस ओर ध्यान नहीं दे रहा है। अफसर नियमों का हवाला देकर चुप्पी साधे बैठे हैं। वहीं चिरमिरी के बाशिंदे जहरीली हवा के बीच जीवन गुजारने के लिए मजबूर हैं। चिरमिरी में भीषण आग के कारण खदान में अब तक लाखों टन कोयला राख में तब्दील हो चुका है, लेकिन अब तक इस आग पर काबू पाने में एसईसीएल प्रबंधन नाकाम रहा। आस-पास के करीब 30 हजार लोगों को परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है।

जहरीली गैस इंसानों को बीमार बना रही: चिरमिरी के रहवासी आग के कारण दोहरी मुसीबत में हैं। एक तरफ जलते कोयले के कारण जमीन कभी भी अंदर से धसक सकती है। वहीं दूसरी तरफ कोयले से निकलने वाली जहरीली गैस इंसानों को बीमार बना रही है।

सांस और दिमाग संबंधी बीमारियों की परेशानी: गैस हवा में घुलकर आसपास के वातावरण को भी दूषित कर रही है। डॉक्टर्स की माने तो कोयले से निकलने वाली गैस जहरीली होती है।

नई नवेली दुल्हन से अननैचुरल सेक्स, बिगड़ी तबीयत

बीवी से पति करता था गंदा काम, बदनामी के डर से बताई नहीं

बिलासपुर एजेंसी। छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में नई नवेली दुल्हन से उसका पति अननैचुरल सेक्स करता रहा, जिससे युवती की तबीयत बिगड़ गई। जब परिजन उसे अस्पताल लेकर गए, तब आरोपी पति की करतूतों का पता चला।

इस मामले की शिकायत पुलिस से की गई। पुलिस ने आरोपी पति के खिलाफकेस दर्ज कर लिया है। मामला चकरभाठा थाना क्षेत्र का है।

पति की हरकतों को सहती रही पत्नी: पुलिस के अनुसार चकरभाठा क्षेत्र में रहने वाली 22 वर्षीय युवती की शादी तीन महीने पहले हुई है। शादी के बाद जब वह ससुराल पहुंची, तब उसका पति उसके साथ शारीरिक संबंध बनाने के बजाए उसके साथ अप्राकृतिक कृत्य करने लगा। युवती अपने पति की हरकतों को सहन करती रही।

मना करने पर देता था धमकी: पति के इस क्रूरता से युवती परेशान हो गई थी। वह बार-बार मना करती रही, लेकिन उसका पति नहीं माना। युवती अपनी बदनामी और लोकलाज के भय से इसकी जानकारी किसी को नहीं दे पा रही थी। लगातार अप्राकृतिक कृत्य करने से युवती की तबीयत बिगड़ने लगी।

आरोपी पति के खिलाफ केस दर्ज: जब वो अपने मायके गई, तब उसने अपने परिजन को घटना की जानकारी दी, जिसके बाद परिजन उसे अस्पताल ले गए। साथ ही घटना की शिकायत पुलिस से की। पुलिस ने मामले में आरोपी पति के खिलाफ धारा 377 के तहत केस दर्ज कर लिया है।

ट्रेलर के केबिन में घुसा भारी ब्रिज-गर्डर, ड्राइवर की मौत

जगदलपुर लेकर जा रहा था सामान

मीडिया ऑडीटर, कोंडागांव एजेंसी। छत्तीसगढ़ के कोंडागांव में ट्रेलर में लोड लोहे का सामान केबिन में घुस गया, जिससे ड्राइवर की घटना स्थल पर ही मौत हो गई। बताया जा रहा है कि ट्रेलर रायपुर से जगदलपुर जा रहा था, तभी कोंडागांव में हादसे का शिकार हो गया। हादसा कोंडागांव नेशनल हाइवे 30 में हुआ है।

मिली जानकारी के मुताबिक ट्रक पर ब्रिज बनाने का लोहे का सामान चेन से बंधा था। चालक आराम से ट्रेलर चला रहा था। इसी बीच कोंडागांव सिटी कोतवाली के पास चेन के टूटने से लोहे का भारी भरकम समान सीधे ट्रेलर के केबिन में गिर गया।

पोस्टमॉर्टम के लिए रायपुर एम्स भेजा गया शव: हादसे के बाद कुछ देर नेशनल हाइवे पर जाम लग गया। बताया जा रहा है कि वाहन चालक का नाम रामेश्वर सिंह दरमी है। वह खुर्द औरंगाबाद का रहने वाला है।

पुलिस मामले की जांच कर रही है। पुलिस के मुताबिक शव को पोस्टमॉर्टम के लिए रायपुर एम्स भेजा गया है।

फॉर्च्यूनर ने पिकअप को ठोका, फिर ड्राइवर को पीटा

दुर्ग में पुलिस ने कार को जाने दिया, माल वाहक को रोका, गुस्साए ग्रामीणों ने घेरा थाना

मीडिया ऑडीटर, भिलाई एजेंसी। भिलाई के वैशाली नगर थाने के सामने एक फॉर्च्यूनर और पिकअप वाहन में टक्कर हो गई। फॉर्च्यूनर चालक ने रॉन्ग साइड में होने के बाद भी पिकअप के ड्राइवर को मार दिया। इससे मामला वैशाली नगर थाने पहुंच गया। वहां पुलिस ने फॉर्च्यूनर को तो जाने दिया, लेकिन पिकअप को खड़ा करा दिया। इसे देख बस्ती के सैकड़ों लोग वहां पहुंच गए और थाने का घेराव कर दिया।

थाने के ठीक सामने अंबेडकर नगर बस्ती है। वहां से थाने का घेराव करने पहुंची महिलाओं और युवाओं ने वैशाली नगर पुलिस पर गरीबों के ऊपर गलत कार्रवाई करने का आरोप लगाया। यहां की रहने वाले महिला आशा इंदुलकर ने बताया कि एक कार चालक ने पहले तो गलत साइड से आकर डीजे साउंड ले जा रहे पिकअप में टक्कर मार दी, उसके बाद वो पिकअप के चालक पर चिल्लाने लगा और उसे कई झापड़ मारा।

शराब के नशे में धुत्त था कार चालक: बताया जा रहा है कि कार को एक सरदार चला रहे थे। उन्होंने काफी अधिक मात्रा में शराब पी हुई थी। इसके बाद वो लोग अपने कई लड़कों को बुला लिया। सभी लड़के पिकअप चालक को धमकी दे रहे थे। यह देख पूरी बस्ती के लोग थाने पहुंचे और थाने का घेराव कर दिया।

पुलिस ने फॉर्च्यूनर को जाने दिया: महिला ने बताया कि पुलिस ने पिकअप गाड़ी को तो थाने के सामने खड़ा करा दिया, लेकिन फॉर्च्यूनर को जाने दिया। लोगों ने देखा कि नशे में होने के बाद भी कार चालक उसके लोग उन्हें देख लेने की धमकी दे रहे हैं तो उसके बाद उन्होंने मामले में आपसी समझौता कर लिया।

थाना प्रभारी ने कुछ भी बोलने से किया मना: इस बारे में वैशाली नगर थाना प्रभारी ममता अली शर्मा ने कुछ भी बोलने से मना कर दिया। उन्होंने कहा कि वो सिविल ड्रेस में थाने आई हैं, इसलिए कोई बाइट नहीं दे सकती हैं। उन्होंने कहा कि एक्सीडेंट के मामले में दोनों पक्षों के बीच समझौता हो गया है। कार चालक के शराब पिये होने मारपीट और धमकी जैसी किसी भी बात को उन्होंने गलत बताया है।

गाड़ी ना बनवाने की बात पर बनी सहमति: पिकअप के मालिक रवि कुमार गणवीर ने बताया कि उसका ड्राइवर प्रताप डीजे साउंड पिकअप में लेकर आ रहा था। दूसरी तरफसे रॉन्ग साइड में ब्लैक कलर की फॉर्च्यूनर आ रही थी। उसे एक सरदार जी चला रहे थे। उन्होंने पिकअप को सीधे सीधे टक्कर मार दी। इसके बाद वो गाड़ी से उतरे और प्रताप को कई झापड़ मारा।

मामला थाने पहुंचा तो दोनों के बीच यह समझौता हुआ कि ना वो मेरी गाड़ी बनवाएंगे और ना मैं उनकी गाड़ी बनवाऊंगा। विधायक प्रतिनिधि सचिन ताम्रकार भी थाने पहुंचे और उन्होंने समझौता करने की सलाह दी।

सड़क हादसे में 3 युवकों की मौत

तेज रफ्तार में बाइक सवार कर रहे थे बस को ओवरटेक, मोड़ पर हुई टक्कर

मीडिया ऑडीटर, रायगढ़ एजेंसी। छत्तीसगढ़ के रायगढ़ जिले में ओवरटेक करने की वजह से बाइक सवार तीन युवक बस से टकरा गए। हादसे में 2 लोगों की मौके पर ही मौत हो गई। वहीं तीसरे को इलाज के लिए अस्पताल ले जाया गया, जहां उसने भी दम तोड़ दिया। घटना लैलूंगा थाना क्षेत्र के आंगेकेला मोड़ का है। जानकारी के मुताबिक जशपुर से 3 युवक बाइक से कुछ काम के लिए रायगढ़ की ओर जा रहे थे। इसी दौरान सुबह करीब 10 बजे गोसाईडीह आंगेकेला मोड़ के पास बस से टक्कर हो गई। मरने वाले तीनों युवक कोतबा थाना क्षेत्र के मधुबन के रहने वाले थे।

युवक ने अस्पताल में तोड़ा दम: हादसे के बाद आसपास के लोगों ने पुलिस और एंबुलेंस को सूचना दी गई। पुलिस और राहगीरों की मदद से एक घायल युवक को लैलूंगा अस्पताल में भर्ती भी कराया गया, लेकिन गंभीर चोट लगने की वजह से उसने दम तोड़ दिया। पुलिस ने तीनों युवकों की लाश को पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया गया है।

पुलिस कर रही जांच: मामले में धरमजयगढ़ एसडीओपी सिद्धांत तिवारी ने बताया कि तीनों युवकों की उम्र लगभग 22 से 25 साल के बीच होगी। इनके पास से किसी भी तरह का आई-कार्ड नहीं मिला है जिसके कारण तीनों की फिलहाल पहचान नहीं हो पाई है। पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी।

परिजनों का इंतजार: तीनों मृतकों को लेकर सिर्फ यही जानकारी मिल रही है कि वे कोतबा थाना इलाके के रहने वाले थे। अब इनके परिजनों के आने के बाद ही युवकों के नाम और मामले की पूरी जानकारी सामने आ सकेगी।

शराब दुकान में मिलावट का खेल

अंग्रेजी वाइन शॉप में आबकारी विभाग ने की छापेमारी, पकड़े गए सुपरवाइजर, सेल्समैन और मल्टीवर्कर

मीडिया ऑडीटर, कोरबा एजेंसी। छत्तीसगढ़ के कोरबा में ट्रांसपोर्ट नगर स्थित विदेशी शराब दुकान में जिला आबकारी विभाग की टीम ने छापेमारी की। शराब दुकान के कर्मचारियों को मिलावट करते रंगेहाथों पकड़ा है। इसमें सुपरवाइजर, सेल्समैन और मल्टीवर्कर शामिल थे।

बताया जा रहा है कि विदेशी शराब दुकान में कर्मचारी शराब दुकान बंद होने के बाद चोरी छिपे कम रेट के शराब को अधिक रेट में बेचते थे। शराब की बोतलों में मिलावट का काम कर रहे थे। इसकी शिकायत आबकारी विभाग से की गई।

मिलावट करते पकड़े गए सुपरवाइजर, सेल्समेन और मल्टीवर्कर: इसके बाद आबकारी विभाग की संयुक्त टीम दुकान खुलते ही मौके पर पहुंची। जांच कार्रवाई शुरू की गई। इस दौरान सुपरवाइजर प्रतिपाल यादव, सेल्समेन प्रवीण जयसवाल और मल्टींवर्कर होलिका सिंह को मदिरा मिलावट करते पकड़ा गया।

बताया जा रहा कि आरोपियों के कब्जे से 6 मैकडॉवेल्स नम्बर 1 की बॉटल में भरी मिलावटी शराब, 6 मैकडॉवेल्स छव. 1 बॉटल की ख़ाली शीशी ढक्कन, 6 नग गोवा व्हिस्की बॉटल ख़ाली शीशी, 04 नग ऑफ्टरडार्क बॉटल की ख़ाली शीशी और ढक्कन बरामद किया गया।

उच्च अधिकारियों से सांठ गांठ: बताया जा रहा है कि ये खेल काफी लंबे समय से चल रहा था, जिसकी शिकायत ग्राहक भी कर रहे थे। विभाग को इंतजार था कि कब इस खेल का पर्दाफाश करें।

बताया यह भी जा रहा है कि जिले में कई ऐसे शराब दुकान हैं, जहां शराब में मिलावट का अवैध कारोबार किया जा रहा है। कहा जा रहा है कि उच्च अधिकारियों से उनकी सांठ गांठ है।

बिना डिग्री क्लीनिक चला रही थी महिला डॉक्टर

कई बड़े अस्पताल और मेडिकल कॉलेज में कर चुकी हैं काम, स्वास्थ्य विभाग ने थमाया नोटिस

मीडिया ऑडीटर, दुर्ग एजेंसी। दुर्ग जिले में प्रभा पटैरिया नाम की महिला डॉक्टर बिना डिग्री के अपना क्लीनिक संचालित कर रही थी। इतना ही नहीं उसने अपनी फर्जी डिग्री के आधार पर कई बड़े निजी अस्पताल और मेडिकल कॉलेज तक में सेवाएं दी और अभी भी दे रही हैं। इसकी जानकारी होने पर दुर्ग ब्डभ्व् ने नर्सिंग होम एक्ट के तहत नोटिस जारी कर 3 दिन के भीतर जवाब मांगा है। दुर्ग जिले के नर्सिंग होम एक्ट के नोडल अधिकारी डॉ. अनिल शुक्ला ने बताया कि उन्हें शिकायत मिली थी कि डॉ. प्रभा पटैरिया बिना वैध डिग्री के रूआबांधा बस्ती भिलाई में आकृति नाम से क्लीनिक का संचालन कर रही हैं।

किसी भी प्रकार की कोई मेडिकल की डिग्री नहीं: उनके पास किसी भी प्रकार की कोई मेडिकल की ऐसी डिग्री नहीं है, जिससे वो एलोपैथी का उपचार कर सकें। इसकी जानकारी उन्होंने सीएमएचओ दुर्ग जेपी मेश्राम और कलेक्टर ऋचा प्रकाश चौधरी को दी। इसके बाद उनके निर्देश पर एक टीम का गठिन किया गया।

आकृति क्लीनिक में छापेमारी: सीडीएचओ के निर्देश पर टीम ने 8 जून शनिवार को रूआबांधा जाकर आकृति क्लीनिक में छापा मारा। छापेमारी के दौरान डॉ. शुक्ला ने डॉ. प्रभा पटैरिया से क्लीनिक संचालन के लिए वैध दस्तावेज और डिग्री मांगी, लेकिन वो नहीं दे सकीं। बिना डिग्री के कोई भी व्यक्ति एलोपैथी पद्धति से चिकित्सीय सेवा का कार्य नहीं कर सकता है। इसके बावजूद डॉ. पटैरिया बिना नर्सिंग होम एक्ट का लाइसेंस लिए लोगों को गलत जानकारी देकर उनका इलाज करती रहीं। नोटिस में पूछा गया है कि क्लीनिक के बोर्ड में खून और पेशाब जांच की सुविधा उलब्ध की जानकारी दी गई है। जब आपके पास नर्सिंग होम एक्ट का लाइसेंस नहीं है तो यह सुविधा किस लाइसेंस के तहत दी जा रही थी।

कई बड़े अस्पतालों और मेडिकल कॉलेज में भी कर चुकी हैं काम: डॉ. प्रभा बिना वैध डिग्री के चंदूलाल चंद्राकर मेमोरियल हॉस्पिटल, कोठारी नर्सिंग होम दुर्ग में काम कर चुकी हैं। कुछ समय पहले तक डॉ. पटैरिया श्रीशंकराचार्य मेडिकल कॉलेज में अपनी सेवाएं दे रही थीं, लेकिन जैसे ही उन्हें उनकी डिग्री के बारे में जानकारी मिली उनकी सेवाएं 16 जनवरी 2024 को समाप्त कर दी गईं। डॉ. प्रभा पटैरिया वीवाय हॉस्पिटल में अपनी सेवाएं दे चुकी हैं। साथ ही जिस प्रसूता के केस में वीवाय हॉस्पिटल को बंद किया गया है उसके उपचार के दौरान भी वो हॉस्पिटल में दिखीं थीं। नोटिस के माध्यम से डॉ. प्रभा से पूछा गया कि वो इन हॉस्पिटल में किस पद और किस प्रकार का चिकित्सीय कार्य कर रही थीं उसकी जानकारी दें।

बिना लाइसेंस संचालित हो रहा था क्लीनिक: डॉ. अनिल शुक्ला ने बताया कि डॉ. प्रभा पटैरिया ने सीएमएचओ कार्यालय से आकृति क्लीनिक चलाने के लिए नर्सिंग होम एक्ट का लाइसेंस नहीं लिया था। बिना लाइसेंस के क्लीनिक का संचालन करना नर्सिंग होम एक्ट के तहत दंडनीय अपराध है। इसे देखते हुए उन्हें तत्काल क्लीन को बंद करने का आदेश दिया गया है। इतना ही नहीं उनके पास जो डिग्री थीं उनसे वे आयुर्वेदिक उपचार कर सकती थीं, लेकिन वो एलोपैथी पद्धति से इलाज कर रही थीं।

क्लीनिक के बोर्ड में गलत डिग्री का डिसप्ले: डॉ. प्रभा पटैरिया रूआबांधा में अवैध तरीके से आकृति क्लीन चलते हुए पाई गईं। इतना ही नहीं उन्होंने लोगों को गुमराह करने के लिए बोर्ड में अपनी योग्यता ठैब्, ठ।डै, च्ळक्ल्छ और एमएचए लिखी है। जब नर्सिंग होम एक्ट की टीम ने उनसे वो डिग्री मांगी वो उसे नहीं दे पाईं। इससे यह साबित होता है कि बिना वैध डिग्री के डॉ. प्रभा मरीज का उपचार कर उनकी जान जोखिम में डाल रहीं थीं। इसके साथ ही उनके क्लीनिक में अभिषेक पटैरिया भी मरीजों का उपचार करते हुए पाए गए, जबकि उनके पास भी किसी प्रकार की कोई वैध डिग्री नहीं है। क्लीनिक में एलोपैथी दवाएं और इंजेक्शन रखे गए थे, जो कि मरीजों को दिए जा रहे थे।

प्रेस कांफ्रेस करके बुरी फंसी डॉक्टर: डॉ. प्रभा पटैरिया और वीवाय हॉस्पिटल के डॉक्टर विश्वनाथ ने कुछ दिन पहले एक प्रेस कॉन्फ्रेंस बुलाई थी। उसमें उन्होंने नर्सिंग होम एक्ट के संचालक डॉ. अनिल शुक्ला के खिलाफ पैसे मांगने का आरोप और गलत कार्रवाई करने का आरोप लगाया था।

रूस में पुतिन की दोनों बेटियां इकोनॉमिक समिट में दिखीं

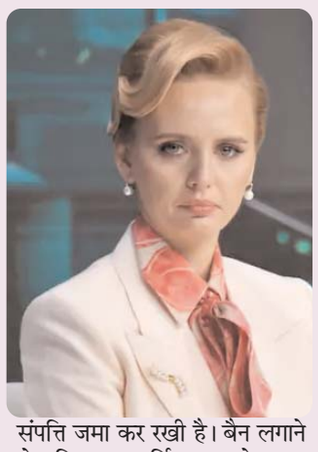

रूस (एजेंसी)। स के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन की दो बेटियां हैं। मारिया वोरोत्सोवा (39) और कतेरिना तिखोनोवा (37)। उनकी गिनती रूस की सबसे अमीर लड़कियों में होती है। दोनों ही रूस में राष्ट्रपति भवन से जुड़ा काम देखती हैं। सीएनएन के मुताबिक पुतिन की बेटियां पब्लिक में काफी कम नजर आती हैं। इस बीच दोनों को सेंट पीटर्सबर्ग इंटरनेशनल इकोनॉमिक फोरम में हिस्सा लिया। पश्चिमी मीडिया में इसकी खूब चर्चा हो रही है। सी मीडिया हाउस नोवाया गजेटा यूरोप के मुताबिक, पुतिन की दोनों बेटियों ने पहले भी हर साल होने वाले सेंट पीटर्सबर्ग फोरम में हिस्सा लिया है लेकिन केवल छोटी बहन कतेरिना ही अब तक इसकी वक्ता रही हैं।

पुतिन की छोटी बेटी कतेरिना रूस के डिफेंस सेक्टर के लिए टेक सपोर्ट का काम करती हैं। वह इस कार्यक्रम में वर्चुअली जुड़ीं। उन्होंने अपने संबोधन में डिफेंस सेक्टर से जुड़ी चीजों पर बात की। उन्होंने मिलिट्री टेक्नोलॉजी को मजबूत करने की बात कही और टेक्नोलॉजी के आयात को खत्म करने पर जोर दिया।

पुतिन की बड़ी बेटी मारिया वोरोत्सोवा व्यक्तिगत तौर पर कार्यक्रम में उपस्थित थीं। मारिया वोरन्तसोवा रूस के स्वास्थ्य मंत्रालय में एंडोक्रोनोलॉजी डिपार्टमेंट में एक रिसर्चर हैं। एंडोक्रोनोलॉजी में हार्मोन्स के बारे में रिसर्च किया जाता है। अपने भाषण में वोरोत्सोवा ने बायोटेक्नोलॉजी और बायोप्रोडक्शन के बारे में बात की।

पुतिन की दोनों बेटियों पर अमेरिका ने रूस-यूक्रेन जंग शुरू होने के बाद बैन लगा दिया था। अमेरिका का मानना था कि पुतिन ने अपने बच्चों के नाम पर विदेशों में काफी संपत्ति जमा कर रखी है। बैन लगाने से पुतिन पर आर्थिक रूप से असर पड़ेगा।

रूस में पुतिन के विरोधी नेता एलेक्सी नवेलनी की इसी साल फरवरी में जेल में मौत हो गई थी। उन्होंने मरने से पहले ये दावा किया था कि रूसी राष्ट्रपति पुतिन की बड़ी बेटी मारिया वोरोत्सोवा ने एक मेडिकल कंपनी की कर्मचारी के तौर पर 2019-2022 के दौरान 10 मिलियन डॉलर से भी अधिक कमाए।

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक पुतिन की छोटी बेटी कतेरिना पहले पुतिन के चुनावी भाषण लिखती थीं। साल 2018 के चुनाव में उसने पुतिन के इलेक्शन कैंपेन की जिम्मेदारी भी संभाली थी।

कतेरिना रॉक-एन-रॉल डांसर हैं और यूट्यूब पर काफी लोकप्रिय हैं। 2013 में पुतिन के कट्टर दुश्मन रहे निकोलेई शामलोव के बेटे क्रिल शामलोव से शादी की थी। निकोलेई रूस के सबसे बड़े बैंक रसिया बैंक के को-ऑनर हैं। रूसी निवासी क्रिल शामलोवी से शादी की थी। हालांकि ब्लूमबर्ग न्यूज ने 2018 में दावा किया था कि दोनों का तलाक हो गया है।

नेमावर के सिद्धेश्वर महादेव मंदिर का किया जाएगा जिर्णोद्धार-मुख्यमंत्री

भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने रविवार को देवास जिले के नेमावर में जल-गंगा संवर्धन अभियान में कार्यक्रम में शामिल हुए। उन्होंने नर्मदा नदी पर पूजा-अर्चना करने के पश्चात घाट पर साफ-सफाई की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि यहां के ऐतिहासिक सिद्धेश्वर महादेव मंदिर का जीर्णोद्धार किया जाएगा।

उन्होंने कहा कि प्रदेश में 05 जून से 16 जून गंगा दशहरा तक जल गंगा संवर्धन अभियान चलाया जा रहा है। इसमें नदी, नालों और ऐतिहासिक एवं पारम्परिक जल संरचनाओं, तालाब, झील, कुंआ, बावड़ी आदि के संरक्षण, पुनर्जीवन के लिए कार्य किया जा रहा है तथा उनकी साफ-सफाई गहरीकरण का कार्य भी किया जा रहा है। विधायक श्री आशीष गोविंद शर्मा ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया। इस अवसर पर महंत श्री राम स्वरूप शास्त्री जी महाराज, महंत श्री विठ्ठलदास जी महाराज, महंत श्री भगवत दास जी महाराज, नगर परिषद अध्यक्ष सहित अन्य जनप्रतिनिधिगण व बड़ी संख्या क्षेत्रवासी उपस्थित रहे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि देवास जिले में लगभग 05 करोड़ 65 लाख रुपए की राशि से लगभग 3078 जल संरचनाओं के जीर्णोद्धार के कार्य किए जा रहे हैं।

इनमें नगरीय क्षेत्र में लगभग 01 करोड़ 78 लाख की राशि से 650 संचनाओं पर कार्य किया जा रहा है। साथ ही लगभग 01 करोड़ 68 रुपए की राशि से लगभग 2400 से अधिक जल संरचनाओं का गहरीकरण व साफ-सफाई की जा रही है। उन्होंने कहा कि जिले में 196 पुराने तालाब, 105 स्टॉप डेम 172 कुएं-बावड़ियों व अन्य जल स्त्रोतों पर कार्य किया जा रहा है।

टीएमसी ने ठुकराया न्योता, नरेंद्र मोदी के शपथ ग्रहण समारोह में नहीं होगी शामिल

नई दिल्ली (एजेंसी)। तृणमूल कांग्रेस पार्टी प्रधानमंत्री पद के लिए नामित नरेन्द्र मोदी के शपथ ग्रहण समारोह में शामिल नहीं होगी। पार्टी के नवनिर्वाचित सांसद सुदीप बंदोपाध्याय ने यह जानकारी दी। बंदोपाध्याय ने कहा, भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के प्रह्लाद जोशी ने हमें शपथ ग्रहण समारोह में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया था, लेकिन हमारी पार्टी ने फैसला किया है कि हम समारोह में शामिल नहीं होंगे। तृणमूल सुप्रीमो और पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने शनिवार को एलान किया था कि उनकी पार्टी नयी सरकार के शपथ ग्रहण समारोह में नहीं शामिल होगी। उन्होंने कहा था, न तो हमें आमंत्रित किया गया और न ही हम समारोह में शामिल होंगे। नरेन्द्र मोदी रविवार शाम 7.15 बजे राष्ट्रपति भवन में प्रधानमंत्री पद की शपथ लेंगे। समारोह से पहले, मंत्रिपरिषद में शपथ लेने वाले संभावित मंत्री प्रधानमंत्री आवास पर जलपान कार्यक्रम में शामिल होंगे। सूत्रों के अनुसार, बंगाल से भाजपा के 12 सांसदों में से एक शांतनु ठाकुर को भी मंत्री पद की शपथ दिलाए जाने की संभावना है। बंदरगाह, जहाजरानी और जलमार्ग मंत्रालय के पूर्व मंत्री ठाकुर ने जलपान कार्यक्रम के लिए निमंत्रण मिलने की न तो पुष्टि की और न ही इससे इनकार किया। सांसदों के साथ हुई बैठक में ममता ने यह दावा किया कि राष्ट्रीय जनतांत्रिक सरकार (राजग) अपना कार्यकाल पूरा नहीं कर पाएगी। बैठक में मौजूद तृणमूल के एक वरिष्ठ नेता ने कहा, ममता दीदी ने हमें बताया कि उन्हें पूरा भरोसा है कि भाजपा को बहुमत नहीं मिलने के कारण राजग सरकार लंबे समय तक नहीं टिक पाएगी।

मोदी कैबिनेट के संभावित मंत्रियों का प्रोफाइल

नई दिल्ली (एजेंसी)। जैसे-जैसे मोदी सरकार के शपथ ग्रहण का वक्त करीब आ रहा है, मंत्रियों के नाम भी सामने आते जा रहे हैं। राष्ट्रपति भवन में आज शाम 7.15 बजे 63 सांसद मंत्री पद की शपथ ले सकते हैं। इनमें सबसे ज्यादा उत्तरप्रदेश से 8 और मप्र से 5 जबकि राजस्थान से 4 हैं। हालांकि अब तक कोई आधिकारिक जानकारी नहीं दी गई है। अमित शाह को फिर से गृह मंत्रालय मिलने के आसार हैं। राजनाथ सिंह रक्षा मंत्री और नितिन गडकरी सड़क परिवहन मंत्री बने रह सकते हैं। शिवराज सिंह चौहान और मनोहर लाल खट्टर पहली बार केंद्रीय राजनीति में आ रहे हैं। दोनों को बड़ी जिम्मेदारी दी जा सकती है। जेडीयू के राज्यसभा सांसद रामनाथ ठाकुर और मुंगेर से सांसद ललन सिंह को भी मंत्री बनाए जाने की चर्चा है। वहीं, टीडीपी से राम मोहन नायडू और पी. चंद्रशेखर पेम्मासानी को मंत्री बनाया जा सकता है। इसके अलावा 7 अन्य पार्टियों से एक-एक सांसद को मोदी कैबिनेट में जगह मिल सकती है। एनडीए सरकार में एक मंत्री पद को लेकर अजित पवार की एनसीपी में खींचतान चल रही है।

मोदी कैबिनेट में मांझी, चिराग, ललन सिंह और रामनाथ ठाकुर का मंत्री बनना तय! शपथ ग्रहण के लिए आया फोन

नई दिल्ली (एजेंसी)। मोदी सरकार 3.0 का शपथ ग्रहण समारोह आज शाम 7.15 बजे राष्ट्रपति भवन में होगा। नरेंद्र मोदी आज तीसरी बार देश के प्रधानमंत्री की शपथ लेंगे। वहीं, नरेंद्र मोदी के शपथ लेने से पहले मोदी कैबिनेट के संभावित मंत्रियों के पास फोन पहुंचने लगे हैं। सूत्रों के मुताबिक, लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) के अध्यक्ष चिराग पासवान, हिंदुस्तानी आवाम मोर्चा (सेक्युलर) के मुखिया और बिहार के पूर्व सीएम जीतन राम मांझी, जदयू से रामनाथ ठाकुर और ललन सिंह के पास भी फोन पहुंच चुका है। हालांकि अभी तक आधिकारिक रूप से कुछ भी सामने नहीं आया है। बता दें कि इस बार मोदी सरकार 3.0 में टीडीपी और जेडीयू की बड़ी भूमिका है। क्योंकि बीजेपी लोकसभा चुनावों में 272 सीटों के साथ पूर्ण बहुमत हासिल करने में विफल रही, इसलिए वह एनडीए के अपने सहयोगी जदयू और टीडीपी के समर्थन से सरकार बनाएगी।

भाजपा अपने पास रखेगी ये 4 अहम मंत्रालय

नई दिल्ली (एजेंसी)। मोदी सरकार 3.0 का शपथ ग्रहण समारोह आज शाम 7.15 बजे राष्ट्रपति भवन में होगा। नरेंद्र मोदी आज तीसरी बार देश के प्रधानमंत्री की शपथ लेंगे। शपथ ग्रहण कार्यक्रम के लिए अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे को न्योता मिला है। वहीं इस बीच सूत्रों के हवाले से खबर है कि भाजपा अपने पास 4 अहम मंत्रालय रखने वाली हैं। जिनमें से वित्त, विदेश, गृह और रक्षा है। इसके अलावा बाकी मंत्रालयों में से बीजेपी अपने सहयोगियों को दे सकती है।

नीट परीक्षा विवाद के बीच राहुल गांधी ने छात्रों से कहा- संसद में मैं आपकी आवाज बनूंगा

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने रविवार को प्रधानमंत्री पद के लिए मनोनीत नरेंद्र मोदी पर नीट-यूजी मेडिकल प्रवेश विवाद को लेकर निशाना साधा और कहा कि परीक्षा में कथित अनियमितताओं ने उनके नए कार्यकाल के लिए शपथ लेने से पहले ही 24 लाख से अधिक छात्रों को तबाह कर दिया है। कांग्रेस नेता ने देश के छात्रों को भरोसा दिलाया कि वह संसद में उनकी आवाज बनेंगे और उनके भविष्य से जुड़े मुद्दों को मजबूती से उठाएंगे। नीट-यूजी मेडिकल प्रवेश परीक्षा में अंकों को बढ़ा-चढ़ाकर पेश किए जाने के आरोपों के बीच राष्ट्रीय परीक्षण एजेंसी (एनटीए) ने शनिवार को घोषणा की कि शिक्षा मंत्रालय ने 1,500 से अधिक उम्मीदवारों को दिए गए अनुग्रह अंकों की समीक्षा के लिए चार सदस्यीय पैनल का गठन किया है। एक्स पर हिंदी में लिखे एक पोस्ट में गांधी ने कहा, नरेंद्र मोदी ने अभी शपथ भी नहीं ली है और नीट परीक्षा में अनियमितताओं ने 24 लाख से अधिक छात्रों और उनके परिवारों को तबाह कर दिया है।

इंदौर में ट्रेन में मिले युवती के शव के टुकड़े

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर रेलवे स्टेशन के यार्ड में युवती का शव मिला है। शव तीन हिस्सों में है। कमर के नीचे का हिस्सा और हाथ धड़ से कटे मिले हैं। पुलिस ने शव बरामद कर पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया है। टीआई संजय शुक्ला के मुताबिक शनिवार रात 12 बजे ट्रेन की सफाई के दौरान सफाईकर्मी इंजन के पीछे दूसरे नंबर के कोच में पहुंचा। यहां सफाई करने के दौरान झाड़ू बर्थ के नीचे अटक गई। सफाईकर्मी को लगा कोई सामान भूल गया। उसने झांककर देखा तो नीचे बैग और एक थैला था। ट्रॉली बैग में लॉक नहीं था, उसे जब खोला तो उसमें युवती का धड़ था। उसके हाथ नहीं थे। सफाईकर्मी ने तत्काल जीआरपी को सूचना दी। पुलिस के आने पर थैला खोला तो उसमें कमर के नीचे का हिस्सा और कटे हुए हाथ रखे मिले थे। रविवार सुबह शव का एमवाय अस्पताल में पोस्टमॉर्टम किया गया है। जिस ट्रेन में शव मिला वह ट्रेन रात 8 बजे महू से चलती है। सुबह 8 बजे नागदा जाती है। इससे पहले यार्ड में आकर खड़ी होती है।

निश्चित रूप से समीक्षा की जरूरत है, अग्निवीर को खत्म करना चाहिए, केसी त्यागी के बयान पर बोले पप्पू यादव

पटना (एजेंसी)। एनडीए सरकार के गठन से पहले जदयू ने अग्निवीर और यूसीसी पर फिर से विचार करने की सलाह? दी। पार्टी के प्रवक्ता केसी त्यागी ने कहा कि अग्निवीर योजना को लेकर मतदाताओं का एक वर्ग नाराज है। वहीं उनके इस बयान पर पूर्णिया लोकसभा सीट से निर्दलीय सांसद पप्पू यादव ने कहा कि निश्चित रूप से समीक्षा की जरूरत है, अग्निवीर को खत्म करना चाहिए। पप्पू यादव ने आगे कहा, जहां तक यूसीसी का सवाल है भाजपा अपने घटक दल से बात करें। मैं चंद्रबाबू और नीतीश कुमार से कहूंगा कि समाज में नफरत फैलाने वाले किसी प्रकार के कदम का आप समर्थन न करें। पप्पू यादव ने कहा, ... बिहार में उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र की तरह क्यों नहीं हुआ? मैं चाहता हूं नीतीश कुमार और चिराग पासवान के भरोसे सरकार है तो आरक्षण लागू कराएं, जातीय जनगणना कराएं, विशेष राज्य का दर्जा लें, विशेष पैकेज लें। बिहार के बाढ़ की स्थिति के लिए बांध बनवाएं। अधिक से अधिक हवाई अड्डा हो। मैं चाहता हूं कि विकास हो।

मेरी विचारधारा राहुल गांधी और प्रियंका गांधी की है। पूर्णिया के विकास के लिए पीएम मोदी से मैं जरूर मदद लूंगा...बता दें कि जेडीयू प्रवक्ता केसी त्यागी ने कहा था कि अग्निवीर योजना को लेकर मतदाताओं का एक वर्ग नाराज है।

स्मृति ईरानी को मंत्रिमंडल में लेने से परहेज कर सकते हैं प्रधानमंत्री?

नई दिल्ली (एजेंसी)। नरेंद्र मोदी आज शाम 7.15 बजे राष्ट्रपति भवन में शपथ लेंगे। नरेंद्र मोदी के लगातार तीसरे शपथ ग्रहण समारोह में बस कुछ ही घंटे बचे हैं। ऐसे में सभी की निगाहें मोदी कैबिनेट में सीटों के बंटवारे पर टिकी हैं। सूत्रों के मुताबिक, लखनऊ से भाजपा के विजयी उम्मीदवार राजनाथ सिंह के केंद्रीय रक्षा मंत्री बने रहने की संभावना है।

इसके साथ ही एक नाम खासी चर्चा में आ गया है। वह अमेठी से तीसरी बार चुनावी मैदान में उतरीं और दूसरी बार कांग्रेस से हारीं स्मृति ईरानी का है। सवाल यह उठ रहा है कि क्या केंद्रीय कैबिनेट में स्मृति ईरानी को जगह मिलेगी? दरअसल, स्मृति ईरानी अमेठी लोकसभा सीट से तीसरी बार चुनावी मैदान में उतरी थीं। इससे पहले वह 2014 में राहुल गांधी के हाथों हारी थीं। इसके बाद उन्हें भारतीय जनता पार्टी ने राज्यसभा में भेजा था। इस बार भाजपा के वरिष्ठ नेताओं को उम्मीद कम है। सूत्रों के मुताबिक, उम्मीद है कि स्मृति ईरानी को संगठन में जिम्मेदारी दी जा सकती है या फिर उन्हें राज्यसभा के जरिए संसद में भेजा जा सकता है,

यूपी के 14 बड़े चेहरे, जिनकी राजनीति खत्म

लखनऊ (एजेंसी)। इस बार लोकसभा चुनाव में हारने या फिर टिकट कटने के बाद यूपी के 14 बड़े सियासी चेहरों का राजनीतिक करियर खत्म होने की कगार पर पहुंच गया। टिकट कटने वालों की लिस्ट में बृजभूषण सिंह, पूर्व जनरल वीके सिंह, संतोष गंगवार से लेकर सत्यपाल सिंह तक के नाम हैं। बृजभूषण की सियासत बेटे ने संभाल ली है। वीके सिंह 73 साल के हैं। अगला चुनाव होने तक वह भाजपा की चुनाव लड़ने की लिमिट (75 साल) क्रॉस कर चुके होंगे। संतोष गंगवार 76 साल के हैं। सत्यपाल सिंह 68 साल के हैं और अब वह अपनी बेटी चारू प्रज्ञा का राजनीतिक करियर आगे बढ़ा रहे हैं। कई चेहरे ऐसे भी हैं, जो चुनाव हार गए। पॉलिटिकल एक्सपर्ट के मुताबिक, हार ने उनकी राजनीति को मुश्किल में डाल दिया। इनमें मेनका गांधी, महेंद्र नाथ पांडेय, भानु प्रताप वर्मा जैसे नाम हैं। अयोध्या से हारे लल्लू सिंह की भी सियासत खत्म मानी जा रही है। 6 बार के सांसद रहे हैं। पत्नी केतकी भी सांसद रह चुकी हैं। बड़ा बेटा प्रतीक भूषण दूसरी बार गोंडा सदर से विधायक हैं। छोटे बेटे करण भूषण इस बार कैसरगंज से सांसद बने हैं। पहलवानों से यौन शोषण के आरोपों के चलते बृजभूषण को टिकट नहीं मिला था। इसके बाद भी उन्होंने बेटे को सांसद बनाया। ऐसे में उन्हें राज्यसभा भेजा जा सकता है या फिर संगठन में कोई पद दिया जा सकता है। फिलहाल, बृजभूषण क्षेत्र में दोनों बेटों को मजबूत करेंगे। 8 बार के सांसद संतोष गंगवार केंद्रीय मंत्री भी रह चुके हैं। 76 साल की उम्र के चलते उनका टिकट कट गया। इस बात का बरेली में काफी विरोध भी हुआ था। राजनीति में लंबा समय गुजारने के बावजूद उन्होंने परिवार के लोगों को राजनीति में नहीं आने दिया।

भूकंप के झटकों से हिली राजस्थान की धरती

राजस्थान (एजेंसी)। राजस्थान के सीकर जिले में शनिवार देर रात भूकंप के हल्के झटके महसूस किए गए। नेशनल सेंटर फॉर सीस्मोलॉजी के अनुसार देर रात 11 बजकर 45 मिनट पर सीकर जिले में विभिन्न स्थानों पर भूकंप के झटके महसूस किए गए। भूकंप की तीव्रता रिक्टर पैमाने पर 3.9 दर्ज की गई। भूकंप के झटकों से लोग घरों से बाहर निकल आये। जिले के खाटूश्याम , रींगस, दांतारामगढ़ सहित कई क्षेत्रों में भूकंप के झटके महसूस होने के समाचार मिले हैं। हालांकि, राहत की बात यह रही है कि भूकंप की तीव्रता इतनी नहीं थी कि कोई बड़ा नुकसान कर सके। भूकंप से जान माल एवं अन्य किसी नुकसान होने की कोई सूचना नहीं है। जानकारी के लिए आपको बता दें कि धरती की सतह 7 टैक्टॉनिक प्लेट्स से मिल कर बनी है। ये प्लेट्स एक जगह स्थायी नहीं हैं, बल्कि कुछ कुछ समय में तैरती रहती हैं और कभी-कभी एक दूसरे से टकरा

पटनायक के करीबी वीके पांडियन का सक्रिय राजनीति से संन्यास

भुवनेश्वर (एजेंसी)। ओडिशा के पूर्व मुख्यमंत्री बीजेडी चीफ नवीन पटनायक के करीबी और बीजेडी नेता वीके पांडियन ने एक्टिव पॉलिटिक्स से संन्यास लेने की घोषणा की है। उन्होंने रविवार को वीडियो जारी करते हुए संन्यास का ऐलान किया। ओडिशा में हुए विधानसभा चुनाव में बीजेपी ने 78 सीटें जीतकर पांच बार के सीएम पटनायक को सत्ता से बाहर किया है। बीजेडी को केवल 51 सीटें मिली हैं। पार्टी की हार की वजह पांडियन को बताया जा रहा था। पार्टी में उनके दबदबे की चलते स्थानीय नेता नाराज चल रहे थे। सीनियर लीडर्स भी पांडियन को लेकर खुश नहीं थे। वहीं, पांडियन को पटनायक का उत्तराधिकारी भी कहा जा रहा था। तमिलनाडु में जन्मे वीके पांडियन को भाजपा ओडिशा की राजनीति में बाहरी कहती रही है। पांडियन ने दिल्ली में अपनी पढ़ाई की थी। उन्होंने पंजाब कैडर के आईएएस अधिकारी के तौर पर अपना करियर शुरू किया था। बाद में उड़िया महिला से शादी करने के बाद ओडिशा कैडर में ट्रांसफर ले लिया था।

रजनीकांत ने मोदी को दी बधाई, तीसरे कार्यकाल को बताया बड़ी उपलब्धि

तमिलनाडु। सुपरस्टार रजनीकांत ने रविवार को कहा कि नरेन्द्र मोदी का तीसरी बार प्रधानमंत्री बनना बड़ी उपलब्धि है और लोगों ने एक मजबूत विपक्ष सुनिश्चित किया है जो लोकतंत्र के लिए अच्छा संकेत है। दिल्ली रवाना होने से पहले अपने आवास में पत्रकारों से बातचीत करते हुए अभिनेता ने कहा कि जवाहरलाल नेहरू के बाद नरेन्द्र मोदी तीसरी बार प्रधानमंत्री बनने जा रहे हैं जो एक बड़ी उपलब्धि है। रजनीकांत नई दिल्ली में नरेन्द्र मोदी और उनके नए मंत्रिमंडल के शपथ ग्रहण समारोह में भाग लेंगे। बाद में, उन्होंने हवाई अड्डे पर पत्रकारों से कहा, ''नरेन्द्र मोदी का लगातार तीसरी बार पदभार ग्रहण करना बड़ी उपलब्धि है, मैं उन्हें हार्दिक बधाई देता हूं।

मणिपुर के जिरीबाम में 2 पुलिस चौकियां, 70 घर जलाए

इंफाल (एजेंसी)। मणिपुर के जिरीबाम जिले में शनिवार 8 जून को संदिग्ध उग्रवादियों ने दो पुलिस चौकियों, एक फॉरेस्ट ऑफिस और 70 घरों में आग लगा दी। पुलिस का कहना है कि हमलावर 3-4 नावों पर सवार हो बराक नदी के रास्ते घुसे थे। इससे पहले गुरुवार 6 जून को भी कुछ मैतेई गांवों और पुलिस चौकियों पर हमले हुए थे। सूत्रों के अनुसार, चिन-कुकी आतंकवादियों को खत्म करने के लिए बांग्लादेश की सरकार के निर्देश के बाद 200 से अधिक आतंकी बांग्लादेश में भारतीय सीमा में भाग गए हैं। वे मिजोरम के रास्ते मणिपुर में प्रवेश करने की ताक में हैं। इधर, आग लगाने की घटना जीरी मुख और छोटो बेकरा की पुलिस चौकियों और गोआखाल वन बीट ऑफिस में हुई। इस घटना के कुछ घंटों बाद एसपी का तबादला कर दिया गया है। आदेश के अनुसार जिरीबाम एसपी ए घनश्याम शर्मा को मणिपुर पुलिस ट्रेनिंग कॉलेज के एडीशनल डायरेक्टर पद पर ट्रांसफर कर दिया है। उधर, इनर मणिपुर लोकसभा सीट से नवनिर्वाचित कांग्रेस सांसद अंगोमचा बिमोल अकोईजाम ने राज्य सरकार से जिरीबाम के लोगों के जीवन और संपत्ति की रक्षा करने का आग्रह किया। मणिपुर में मई 2023 से जातीय हिंसा जारी है। यहां मैतेई और पहाड़ी इलाकों में रहने वाले कुकी के बीच जातीय संघर्ष में 200 से अधिक लोगों की मौत हो गई है और हजारों लोग बेघर हो गए हैं। मैतेई, मुस्लिम, नागा, कुकी और गैर-मणिपुरी समेत विविध जातीय संरचना वाला जिरिबाम अब तक जातीय संघर्ष से अछूता रहा था। यहां गुरुवार 6 जून की शाम संदिग्ध उग्रवादियों ने 59 साल के एक व्यक्ति की हत्या कर दी। सोइबाम सरतकुमार सिंह नाम का यह व्यक्ति 6 ??जून को अपने खेत में गया था, जिसके बाद वह लापता हो गया।

प्रज्ञाननंदा ने नाकामुरा को हराया, कार्लसन ने खिताब जीता

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय ग्रैंडमास्टर आर प्रज्ञाननंदा ने नॉर्वे शतरंज टूर्नामेंट के अंतिम दौर में अमेरिका के हिकारू नाकामुरा को हराकर अपने अभियान का सकारात्मक अंत किया और तीसरे स्थान पर रहे, जबकि दुनिया के नंबर एक खिलाड़ी मैग्नस कार्लसन ने अपनी ख्याति के अनुरूप प्रदर्शन करके खिताब जीता। कार्लसन ने 17.5 अंक लेकर अपने अभियान का अंत किया।

विजेता बनने पर उन्हें लगभग 65000 डॉलर की इनामी राशि मिली। उन्होंने प्रत्येक दौर में जीत दर्ज की। इनमें क्लासिकल टाइम कंट्रोल और आर्मगेडन दोनों शामिल हैं। नाकामुरा ने अंतिम दौर में हारने के बावजूद 15.5 अंक के साथ दूसरा स्थान हासिल किया जबकि प्रज्ञाननंदा 14.5 अंक लेकर तीसरे स्थान पर रहे। प्रज्ञाननंदा के लिए यह राहत की बात रही कि उन्होंने इस टूर्नामेंट में विश्व के चोटी के तीन खिलाड़ियों को हराया। उन्होंने कार्लसन और फैबियानो कारूआना को क्लासिकल टाइम कंट्रोल में पराजित किया और अब नाकामुरा के खिलाफ उनकी जीत ने सुनिश्चित किया कि वे शीर्ष तीन खिलाड़ियों को हराने वाले पहले खिलाड़ी बन गए हैं। अलीरेजा फिरौजा (13.5 अंक) ने चौथा स्थान हासिल किया। उन्होंने चीन के मौजूदा विश्व चैंपियन डिंग लिरेन को हराया जो छठे और अंतिम स्थान पर रहे। कारूआना ने 10 अंक के साथ पांचवा स्थान हासिल किया। महिला वर्ग में चीन की वेनजुन जू ने हमवतन टिंगजी लेई को हराकर शीर्ष स्थान हासिल किया।

टीम इंडिया को रहना होगा होशियार, भारत-यूएसए का मुकाबला 12 को

नई दिल्ली (एजेंसी)। मेजबान अमेरिका ने टी20 वर्ल्ड कप में पाकिस्तान को हराकर तहलका मचा दिया है। अमेरिका की इस विश्व कप में यह दूसरी जीत है। इससे पहले उसने कनाडा को हराकर इस टूर्नामेंट में अपने अभियान की शुरुआत जीत से की थी। ग्रुप ए में भारत, पाकिस्तान, कनाडा, आयरलैंड और अमेरिका की टीमें हैं। सुपर ओवर में पाकिस्तान को हराने वाली अमेरिकी टीम से भारत को होशियार रहना होगा। उसके खिलाड़ी फॉर्म में हैं और दबाव वाले क्षण में बिखरने के बजाए एकजुट रहते हैं। भारत और अमेरिका का विश्व कप के 25वें मैच में आमना सामना होगा। यह मुकाबला 12 जून को न्यूयॉर्क में खेला जाएगा। अमेरिका ने टी20 विश्व कप में अभी तक दो मैचों में जीत दर्ज की है वह सिर्फ महज एक संयोग नहीं है। टीम ने दमदार खेल खेला है। अमेरिका की टीम में भारत, वेस्टइंडीज, साउथ अफ्रीका मूल के खिलाड़ी खेल रहे हैं।

इनमें से कई ऐसे हैं जो अकेले दम पर मैच को पलटने का दम रखते हैं। अमेरिका ने टी20 विश्व कप में आने से पहले टी20 द्विपक्षीय सीरीज में बांग्लादेश को 2-1 से हराया था।

मैदान में बल्लेबाजों को परेशान करने में बहुत मजा आता है-सौरभ

नई दिल्ली (एजेंसी)। अमेरिका की पाकिस्तान पर जीत में भारतीय मूल के तेज गेंदबाज सौरभ नेत्रवलकर ने अहम रोल निभाया है। सौरभ ने सुपर ओवर में शानदार गेंदबाजी कर अमेरिका को जीत दिलाई। सौरभ भारत की ओर से अंडर 19 वर्ल्ड कप खेल चुका है। सौरभ का कहा कि उन्हें मैदान के बाहर 'कोडिंग' करने और मैदान के अंदर बल्लेबाजों को परेशान करने में बहुत मजा आता है। अमेरका ने पाकिस्तान को हराकर विश्व कप में अपनी लगातार दूसरी जीत दर्ज की है। बाएं हाथ के तेज गेंदबाज सौरभ नेत्रवलकर ने सुपर ओवर में पूर्व चैंपियन पाकिस्तान को लक्ष्य छूने नही दिया जिससे अमेरिका टूर्नामेंट का सबसे बड़ा उलटफेर करने में सफल रही। इससे सौरभ चर्चा का विषय बन गए। सौरभ ने कहा कि यह केवल एक मैच था जिसमें हमने अच्छा प्रदर्शन किया। हमारा ध्यान अगले मैच पर है और सच कहूं तो अमेरिका की टीम में शामिल सभी खिलाड़ी अपनी उपलब्धियां को आत्मसात करने की कोशिश कर रहे हैं। सौरभा मुंबई के रहने वाले हैं और वह भारत की अंडर 19 टीम के सदस्य रहे हैं। सौरभ पेशे से सॉफ्टवेयर इंजीनियर हैं। उन्होंने क्रिकेट और अपनी नौकरी के बीच सामंजस्य स्थापित किया है। उन्होंने कहा कि वह कभी दबाव महसूस नहीं करते जब आप किसी चीज को पसंद करते हैं तब वह आपके लिए काम नहीं रह जाता है।

बांग्लादेश के खिलाफ विजय अभियान जारी रखने उतरेगा दक्षिण अफ्रीका

न्यूयॉर्क (एजेंसी)। अपने पहले दो मैच में जीत दर्ज करके ग्रुप डी में शीर्ष पर काबिज दक्षिण अफ्रीका को अगर टी20 विश्व कप में अपना विजय अभियान जारी रखना है तो बांग्लादेश के खिलाफ सोमवार को यहां होने वाले मैच में उसके बल्लेबाजों को अच्छा प्रदर्शन करना होगा। दोनों टीम के लिए नासाउ काउंटी इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम की अप्रत्याशित व्यवहार कर रही पिच से सामंजस्य से बिठाना आसान नहीं होगा। दक्षिण अफ्रीका ने हालांकि अपने पहले दो मैच इसी मैदान पर खेले हैं इसलिए वह थोड़ा फायदे में रहेगा। बांग्लादेश ने भी भारत के खिलाफ यहां अभ्यास मैच खेला था। दक्षिण अफ्रीका ने भले ही नीदरलैंड और श्रीलंका पर जीत दर्ज की है लेकिन उसके बल्लेबाज इन दोनों मैच में छोटे लक्ष्य का पीछा करते हुए संघर्ष करते हुए नजर आए। दक्षिण अफ्रीका के गेंदबाजों ने हालांकि अभी तक अच्छा प्रदर्शन किया है और इसलिए उसके गेंदबाजी आक्रमण में बदलाव की संभावना नहीं है जिसमें एनरिक नोर्किया, कैगिसो

रबाडा, मार्को यानसन और ओटनील बार्टमेन जैसे तेज गेंदबाज और केशव महाराज जैसा अनुभवी स्पिनर शामिल है। दक्षिण अफ्रीका की चिंता हालांकि शीर्ष क्रम के बल्लेबाजों का लचर प्रदर्शन होगा। नीदरलैंड के खिलाफ उसकी टीम पहले 10 ओवर में केवल 33 रन बना पाई थी। अगर ट्रिस्टन स्टब्स और डेविड मिलर ने मोर्चा नहीं संभाल होता तो उसकी टीम को हार का सामना करना पड़ सकता था। दक्षिण अफ्रीका के अभी दो मैच में चार अंक हैं और बांग्लादेश के खिलाफ जीत से सुपर 8 में जगह बनाने के लिए उसकी स्थिति मजबूत हो जाएगी। रिकॉर्ड भी दक्षिण अफ्रीका के पक्ष में है। उसने अभी तक टी20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में बांग्लादेश से कोई मैच नहीं गंवाया है। बांग्लादेश ने श्रीलंका को हराकर अपने अभियान की शुरुआत की थी जिससे उसका मनोबल बढ़ा होगा, लेकिन दक्षिण अफ्रीका की तरह उसके बल्लेबाजों को भी अच्छा प्रदर्शन करना होगा।

भारत के खिलाफ अभ्यास मैच और श्रीलंका के खिलाफ ग्रुप चरण के मैच में उसके बल्लेबाज संघर्ष करते हुए नजर आए थे। बांग्लादेश के मुख्य बल्लेबाजों में केवल लिटन दास ही कुछ रन बना पाए थे। बांग्लादेश को अगर दक्षिण अफ्रीका पर टी20 में अपनी पहली जीत दर्ज करनी है तो उसके बाकी बल्लेबाजों को भी अच्छा प्रदर्शन करना होगा। ऑलराउंडर शाकिब अल हसन भी अभी तक बल्ले और गेंद दोनों से प्रभाव नहीं छोड़ पाए हैं जो बांग्लादेश के लिए चिंता का विषय होगा।

क्यूरेटर भी न्यूयॉर्क की पिचों को लेकर भ्रमित हैं-रोहित शर्मा

नई दिल्ली (एजेंसी)। नासाउ काउंटी मैदान के पिच के अप्रत्याशित बर्ताव से हैरान भारत के कप्तान रोहित शर्मा ने शनिवार को कहा कि उन्हें नहीं पता कि पाकिस्तान के खिलाफ टी20 विश्व कप मुकाबले में इससे क्या उम्मीद की जाए क्योंकि यहां की 'ड्रॉप-इन' विकेट को लेकर क्यूरेटर भी 'भ्रमित' हैं। ड्रॉप-इन पिचों को आयोजन स्थल से दूर तैयार करने के बाद मैदान में लगाया जाता है। न्यूयॉर्क में खेले गये मैचों में कम स्कोर बने हैं। इसमें आयरलैंड के खिलाफ भारत का पहला मैच भी शामिल है, जब आयरलैंड 100 से कम स्कोर पर आउट हो गया था। आईसीसी को भी पिच की खामियों को स्वीकार करते हुए एक बयान जारी करना पड़ा। रोहित ने पाकिस्तान के खिलाफ अहम मैच की पूर्व संध्या पर कहा, ''न्यूयॉर्क हमारा घरेलू मैदान नहीं है। हमने यहां दो मैच खेले हैं लेकिन हमें इसकी प्रकृति के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं है। यह अलग-अलग दिनों में अलग-अलग तरीके से व्यवहार करता है, इसलिए क्यूरेटर भी भ्रमित है।

'' उन्होंने कहा, '' आप कल्पना कर सकते हैं कि हमें किस तरह की सोच रखने की जरूरत है। हम नहीं जानते कि हम किस पिच पर (पाकिस्तान के खिलाफ) खेल रहे हैं, इसलिए जो भी बेहतर क्रिकेट खेलेगा वह मैच जीतेगा।'' रोहित ने कहा कि आउटफील्ड धीमी होने से चिंताएं और बढ़ गयी हैं। भारतीय कप्तान ने कहा, ''आउटफील्ड धीमी है। कुछ शॉट्स को मैदान पर बहुत अधिक उछाल मिलता है, और कुछ मैदानी शॉट में गति नहीं रहती है। ऐसे में विकेटों के बीच दौड़ना महत्वपूर्ण है। हमें परिस्थितियों के अनुसार खेलने की जरूरत है।'' रोहित ने कहा कि बेहतर क्रिकेट खेलकर ऐसे बाहरी कारकों को बेअसर किया जा सकता है और टीम के उनके साथी अक्सर कठिन परिस्थितियों में भी अच्छा प्रदर्शन करते हैं। भारतीय टीम का हौसला इस तथ्य से भी बढ़ा होगा कि पाकिस्तान अपने शुरुआती मुकाबले में टूर्नामेंट में पदार्पण कर रहे अमेरिका से हार गया था। असमान उछाल के कारण आयरलैंड के खिलाफ टूर्नामेंट के शुरुआती मैच में रोहित और विकेटकीपर बल्लेबाज ऋषभ पंत चोटिल भी हुए थे। रोहित ने कहा, '' मैच जीतने के लिए विरोधी टीम और पिच पर ज्यादा ध्यान दिये बिना अच्छा क्रिकेट खेलना महत्वपूर्ण है। हां, यह कठिन है लेकिन हमारी टीम के पास अच्छा अनुभव है।'' भारत रविवार को शाहीन शाह अफरीदी और हारिस रऊफ जैसे पाकिस्तान के कुछ तेज गेंदबाजों का सामना करना होगा लेकिन रोहित ऑस्ट्रेलिया और दक्षिण अफ्रीका जैसे तेज गेंदबाजी के अनुकूल देशों में टीम के अच्छे प्रदर्शन से आशान्वित है। उन्होंने कहा, '' जब हम दक्षिण अफ्रीका और ऑस्ट्रेलिया जैसी

जगहों पर खेलते हैं तो हमें चुनौतियों से पार पाना होता है। गाबा टेस्ट इसका एक बड़ा उदाहरण है. हम इन कठिन क्षणों में कामयाब होते रहे हैं।'' रोहित ने कहा, ''यह विश्व कप है इसलिए इससे बड़ा कुछ नहीं हो सकता। चोट लगने से पहले टीम का हित आता है।'' मुंबई के इस खिलाड़ी ने संकेत दिया कि पंत तीसरे क्रम पर बल्लेबाजी करना जारी रखेंगे जैसा कि उन्होंने आयरलैंड के खिलाफ किया था। उन्होंने कहा, ''मुझे आईपीएल में कुछ मैचों में ऋषभ को देखना था ताकि यह तय कर सकूं कि वह विश्व कप में कहां बल्लेबाजी करेगा।'' विश्व कप में भारतीय टीम हमेशा पाकिस्तान के खिलाफ मजबूत साबित हुई है लेकिन रोहित पिछले रिकॉर्ड को ज्यादा महत्व नहीं देना चाहते है। उन्होंने कहा कि टीम पर कोई अतिरिक्त दबाव नहीं है क्योंकि वे इसे किसी अन्य मैच की तरह ले रहे हैं। उन्होंने कहा, ''कुछ भी नहीं बदला है। हम सात महीने पहले एशिया कप और (वनडे) विश्व कप में उनके खिलाफ खेल चुके हैं। लेकिन टी20 अप्रत्याशित है। यहां कभी भी खेल का रुख बदल सकता है।'' उन्होंने कहा, ''पिछले विश्व कप में पाकिस्तान जिम्बाब्वे से हार गया था लेकिन फाइनल खेला था। आपका दिन हो तो कोई भी किसी को हरा सकता है।

दक्षिण अफ्रीका ने नीदरलैंड को नौ विकेट पर 103 रन पर रोका

नई दिल्ली (एजेंसी)। ओटनील बार्टमैन, मार्को यानसेन और एनरिच नोर्किया की अगुवाई में गेंदबाजों के शानदार प्रदर्शन से दक्षिण अफ्रीका ने आईसीसी टी20 विश्व कप ग्रुप ए मैच में शनिवार को यहां नीदरलैंड की पारी को नौ विकेट पर 103 रन पर रोक दिया। बार्टमैन ने चार ओवर में 11 रन देकर चार विकेट लिये जिसमें आखिरी ओवर में सिर्फ एक रन खर्च कर उन्होंने तीन विकेट झटके। नोर्किया ने 19 और यानसेन ने 20 रन देकर दो-दो विकेट लिये। नीदरलैंड की टीम 48 रन पर छह विकेट गंवा कर बेहद खराब स्थिति में थी लेकिन साइब्रांड एंजेलब्रेच (40) और लोगन वैन बीक (23) ने सातवें विकेट के लिए 45 गेंद में 54 रन की साझेदारी कर टीम के स्कोर को 100 रन के पार पहुंचाया। एंजेलब्रेच ने 45 गेंद की पारी में दो चौके और एक छक्का लगाया तो वहीं वैन बीक ने 22 गेंद की पारी में तीन चौके लगाये। विक्रमजीत सिंह (12) और कप्तान स्कॉट एडवर्ड्स (10) दहाई के अंक में रन बनाने वाले चार बल्लेबाजों में शामिल रहे। डच टीम से ही पिछले साल 50 ओवरों के विश्व कप में 38 रन से हार का सामना करने वाली दक्षिण अफ्रीका की टीम इस बार कोई भी जोखिम नहीं लेना चाहती थी और उसने शुरुआती ओवर से ही नीदरलैंड पर शिकंजा कसे रखा। पहले बल्लेबाजी के लिए भेजे जाने के बाद यानसेन ने माइकल लेविट (शून्य) को चलता किया। इस विकेट में हालांकि विकेटकीपर क्विंटन डिकॉक का भी हाथ रहा। गेंद के बल्ले को छूकर उनके दस्तानों में गयी लेकिन गेंदबाज ने अपील नहीं की। डिकॉक ने कप्तान एडेन मार्कराम को रिव्यू लेने के लिए कहा और रिप्ले के बाद मैदानी अंपायर के फैसले को बदल दिया गया। बार्टमैन ने चौथे ओवर में मैक्स ओ'डाउड तो वहीं यानसेन ने पांचवें ओवर मे विक्रमजीत को पवेलियन भेजा। पावर प्ले में नीदरलैंड की टीम तीन विकेट पर महज 20 रन ही बना सकी। नोर्किया ने पारी के 10वें ओवर में बास डी लीडे (छह) को आउट किया लेकिन उनके अगले ओवर में एडवर्ड्स ने रिवर्स स्कूप शॉट से छक्का लगा कर 64 गेंद के बाउंड्री के सूखे को खत्म किया। वह हालांकि अगली गेंद पर मार्कराम के थ्रो पर रन आउट हो गये। तेजा निदामनुरु भी बल्ले से कोई योगदान दिये बिना इसी ओवर में आउट हो गये। इसके बाद एंजेलब्रेच एक छोर से संभल कर बल्लेबाजी करते हुए टीम को 13वें ओवर में 50 रन के पार पहुंचाया। उन्होंने केशव महाराज के खिलाफ 15वें ओवर में चौका जड़ा जो टीम की सिर्फ तीसरी बाउंड्री थी। उन्होंने और वैन बीक ने 17वें ओवर एक-एक चौका लगाकर रनगति को थोड़ा तेज किया। दोनों ने 19वें ओवर में रबाड़ा के खिलाफ 15 रन बटोर कर टीम के रनों का शतक पूरा किया। इ समें एंजेलब्रेच ने छक्का जबकि वैन बीक ने चौका शामिल था। बार्टमैन ने आखिरी ओवर में दोनों बल्लेबाजों के साथ टिम प्रिंगल (शून्य) को आउट कर नीदरलैंड को 103 रन पर रोक दिया।

भारत-पाकिस्तान का महामुकाबला!

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत और पाकिस्तान इस साल पहली और शायद आखिरी बार आमने-सामने होंगे। दोनों टीमें न्यूयॉर्क में ञ20 वर्ल्ड कप 2024 में ग्रुप ए के मुकाबले में आमने-सामने होंगी। टूर्नामेंट के खिताब के दावेदारों में से एक माने जाने वाले मेन इन ब्लू, कुछ दिन पहले आयरलैंड के खिलाफ जीत के बाद इस खेल में उतरेंगे। भारत और पाकिस्तान इस साल पहली और शायद आखिरी बार आमने-सामने होंगे। दोनों टीमें न्यूयॉर्क में टी-20 वर्ल्ड कप 2024 में ग्रुप, के मुकाबले में आमने-सामने होंगी। टूर्नामेंट के खिताब के दावेदारों में से एक माने जाने वाले मेन इन ब्लू, कुछ दिन पहले आयरलैंड के खिलाफ जीत के बाद इस खेल में उतरेंगे। इस बीच, पाकिस्तान हाल ही में सुपर ओवर में यूएसए से चौंकाने वाली हार के बाद इस खेल में उतरेगा।

भारत बनाम पाकिस्तान की भिड़ंत को सभी प्रतिद्वंद्विता की जननी कहा जाता है। लेकिन यह पहली और एकमात्र बार हो सकता है जब ये दोनों टीमें 2024 में एक-दूसरे से भिड़ेंगी, क्योंकि पाकिस्तान की यूएसए से हार ने सुपर आठ में पहुंचने के लिए यूएसए के मौके को मजबूत कर दिया है। दोनों कट्टर प्रतिद्वंद्वी न्यूयॉर्क के नासाउ काउंटी इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में एक-दूसरे से भिड़ेंगे। न्यूयॉर्क में नासाऊ काउंटी इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम दोनों पड़ोसियों के बीच होने वाले इस रोमांचक मुकाबले की मेजबानी करेगा। इस मैदान पर तैयार की गई पिचों के प्रकार के कारण इसकी काफी आलोचना हो रही है। सतह पर लगातार उछाल नहीं है, जिससे गेंदबाजों को अच्छा समय मिल रहा है, जबकि बल्लेबाजों को खेलने में परेशानी हो रही है। आईसीसी ने कहा कि स्तरीय मैदानों की टीम कल के खेल (भारत बनाम आयरलैंड) के समापन के बाद से ही स्थिति को सुधारने और शेष मैचों के लिए सर्वोत्तम संभव सतह प्रदान करने के लिए कड़ी मेहनत कर रही है। कथित तौर पर आयोजकों ने घास को वापस जमीन पर धकेलने के लिए रोलर से पिच को समतल कर दिया है। इससे गेंद मैदान पर सपाट तरीके से लगेगी और बल्ले पर बेहतर तरीके से आएगी। हमें लगभग 150 का स्कोर देखना चाहिए।

ऑस्ट्रेलिया ने वर्ल्ड कप मुकाबले में इंग्लैंड को 36 रन से हराया

ब्रिजटाउन (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया ने शीर्ष क्रम के बल्लेबाजों के उपयोगी योगदान और गेंदबाजों के अनुशासित प्रदर्शन के दम पर टी20 विश्व कप में अपने चिर प्रतिद्वंदी इंग्लैंड को 36 रन से हराया। ऑस्ट्रेलिया ने पहले बल्लेबाजी करते हुए सात विकेट पर 201 रन बनाये जो वर्तमान विश्व कप में किसी टीम का अभी तक सर्वोच्च स्कोर है। इंग्लैंड की टीम इसके जवाब में 6 विकेट पर 165 रन ही बना पाई। ऑस्ट्रेलिया की यह लगातार दूसरी जीत है जिससे वह ग्रुप बी में शीर्ष पर पहुंच गया है।

इंग्लैंड को अभी पहली जीत का इंतजार है। उसे अब ओमान और नामीबिया का सामना करना है जबकि स्कॉटलैंड के खिलाफ मैच बारिश की भेंट चढ़ जाने के कारण उसे अंक बांटने पड़े थे। पहले बल्लेबाजी के लिए आमंत्रित किए जाने के बाद डेविड वार्नर (16 गेंद पर दो चौकों और चार छक्कों की मदद से 39 रन) और ट्रेविस हेड (18 गेंद पर 34 रन, दो चौके, तीन छक्के) ने पहले 5 ओवर में 70 रन जोड़कर ऑस्ट्रेलिया को आक्रामक शुरूआत दिलाई। इन दोनों के चार रन के अंदर पवेलियन लौट जाने के बाद कप्तान मिशेल मार्श और ग्लेन मैक्सवेल ने जिम्मेदारी संभाली। मार्श ने 25 गेंद पर 35 रन बनाए जिसमें दो चौके और इतने ही छक्के शामिल हैं। मैक्सवेल ने 25 गेंद पर तीन चौकों और एक छक्के की मदद से 28 रन बनाए। इसके बाद मार्कस स्टोइनिस ने 17 गेंद पर 30 और पैट कमिंस ने 10 गेंद पर नाबाद 17 रन बनाकर उपयोगी योगदान दिया। टिम डेविड ने 11 रन की पारी खेली। स्टोइनिस ने अपनी पारी में दो चौके और इतने ही छक्के लगाए। इंग्लैंड की तरफ से क्रिस जॉर्डन सबसे सफल गेंदबाज रहे। उन्होंने 44 रन देकर 2 विकेट हासिल किए। इसके बाद फिल साल्ट और कप्तान जोस बटलर ने पावर प्ले में 54 रन

जोड़े और फिर मिशेल स्टार्क के अगले ओवर में 19 रन बनाकर पहले विकेट के लिए 73 रन की साझेदारी करके इंग्लैंड को अच्छी शुरुआत दिलाई। एडम जंपा (28 रन देकर दो विकेट) ने साल्ट को बोल्ड करके ऑस्ट्रेलिया को मैच में वापसी दिलाई। साल्ट ने 23 गेंद पर 37 रन बनाए, जिसमें चार चौके और दो छक्के शामिल हैं। जंपा ने इसके बाद बटलर को बैकवर्ड प्वाइंट पर कैच कराया जिन्होंने 28 दिन पर पांच चौकों और दो छक्कों की मदद से 42 रन बनाए। इंग्लैंड का स्कोर 10 ओवर के बाद दो विकेट पर 92 रन था लेकिन इसके बाद आस्ट्रेलिया ने कसी गेंदबाजी की और उसका क्षेत्ररक्षण भी शानदार रहा।

इंग्लैंड के बाद के बल्लेबाजों में मोईन अली (25), हैरी ब्रूक (नाबाद 20) और लियम लिविंगस्टोन (15) अपेक्षित तेजी से रन नहीं बना पाए। ऑस्ट्रेलिया की तरफ से जंपा के अलावा कमिंस ने चार ओवर में 23 रन देकर दो विकेट लिए। स्टार्क महंगे साबित हुए। उन्होंने तीन ओवर में 37 रन लुटाए।

लग्जरी कार से नशे की तस्करी

पुलिस ने 3 लाख के गांजा समेत 6 तस्कर व कार भी जब्त किया

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। नशे के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के तहत मैहर पुलिस के हाथ एक बड़ी कामयाबी लगी है। मैहर पुलिस ने लग्जरी कार से नशे की खेप की तस्करी कर रहे 6 तस्करों को गिरफ्तार कर 50 किलो से अधिक मात्रा में गांजा जब्त किया है। रीवा रेंज के डीआईजी साकेत पांडेय ने रविवार को मैहर में हुई एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में इस कार्रवाई की जानकारी साझा की।

इस मौके पर एसपी सुधीर अग्रवाल भी मौजूद रहे। डीआईजी ने बताया कि बदेरा थाना क्षेत्र के भदनपुर करमटिया रोड पर पटेहरा के पास से घेराबंदी कर इनोवा कार (एमपी 19 सीए 2888) पर सवार 6 बदमाशों को गिरफ्तार किया गया है। पकड़े गए बदमाशों में सद्दाम खान पिता मो अनवर खान निवासी जुलाहन टोला कटरा बाजार मैहर,अमान खान उर्फ शेबु पिता अनवर खान पुरानी बस्ती मैहर, मकसूद खान पिता रमजान खान निवासी पुरानी बस्ती मैहर,मो ताहिर पिता मो इदरीश निवासी रमना टोला ,मोहित शर्मा निवासी गांधी विद्यालय के पास मैहर एवं अरुण दाहिया पिता दुर्गा प्रसाद दाहिया निवासी दुरेहा थाना जसो सतना शामिल हैं।

आरोपियों के कब्जे से दो बोरियों में पैक 50 किलो 140 ग्राम गांजा, इनोवा कार,मोबाइल फोन तथा नगदी जब्त की गई है।

डीआईजी पांडेय ने बताया कि बदेरा थाना प्रभारी आदित्य सेन को 8 जून को भ्रमण के दौरान भदनपुर करमटिया रोड पर पटेहरा के पास इनोवा गाड़ी नंबर एमपी 19 सीए 2888 तथा बलेनो गाड़ी नंबर एमपी 19 सीबी 9579 रामनगर की तरफ जाने के लिए खड़ी दिखी थीं। संदेह होने पर थाना प्रभारी जब तक वहां पहुंचे तब तक बलेनो में बैठ कर चार लोग भाग निकले जबकि इनोवा में बैठा रहा एक व्यक्ति भी फरार हो गया।

पुलिस को इनोवा में सद्दाम और अमान बैठे मिले जबकि तलाशी के दौरान सीट पर दो बोरियों में रखा गांजा मिला। पुलिस ने सद्दाम और अमान को गिरफ्तार कर गांजा समेत कार जब्त कर ली और उनके 5 फरार साथियों की तलाश में लग गई। एसपी मैहर ने इसके लिए दो टीमें बनाईं। टीम ने रविवार की सुबह 5 फरार आरोपियों को पकड़ लिया। अभी एक आरोपी और बलेनो वाहन की तलाश जारी है।

जब्तशुदा गांजा की कीमत 3 लाख रुपए से अधिक आंकी गई है। इस कार्रवाई को अंजाम देने वाली टीम में सीएसपी राजीव पाठक, थाना प्रभारी आदित्य सेन, अनिमेष द्विवेदी, संजय दुबे, टीकाराम कुर्मी समेत अजय परिहार, महेंद्र गौतम, आकाश बागड़े, रवि चौहान, शम्भू राय जितेंद्र गुर्जर, प्रकाश, राघवेंद्र सिंह, बलवीर सिंह, संजय तिवारी एवं गौरव शर्मा शामिल थे।

पानी के टब में डूबने से मासूम की मौत

अस्पताल में डॉक्टरों ने 4 वर्षीय बालक को मृत घोषित किया

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। मझगवां थाना क्षेत्र के बिछियन में घर के अंदर रखा पानी का टब एक मासूम का काल बन गया। टब के पानी मे डूबने से मासूम की मौत हो गई। जानकारी के मुताबिक, मझगवां थाना क्षेत्र के ग्राम बिछियन में रविवार की दोपहर घर के अंदर रखे पानी के टब में डूबने से 4 वर्षीय मासूम सत्यम सिंह पिता विजय सिंह गोंड की मौत हो गई।

बताया जाता है कि दोपहर के वक्त सत्यम घर पर ही खेल रहा था। उसकी मां व अन्य परिजन घर के कामकाज में व्यस्त थे। काफी देर तक जब सत्यम की कहीं कोई आहट नहीं मिली तो माता-पिता ने उसे तलाशना शुरू कर दिया।

इसी दौरान मासूम सत्यम घर के अंदर ही रखे पानी से भरे टब में डूबा मिला। उसे आनन-फानन में सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र मझगवां लाया गया।

जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। इस हादसे के बाद गांव में मातम छाया हुआ है। सूचना मझगवां थाना पुलिस को भी दी गई है।

जल संरक्षण व संवर्धन के लिए जागरूक करने हेतु निकाली गई कलश यात्रा

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। प्रदेश सरकार द्वारा 5 से 16 जून, 2024 तक ''जल गंगा सर्वधन'' अभियान चलाया जा रहा है। जल गंगा संवर्धन अंतर्गत मैहर जिले के वार्ड नम्बर-21 बड़ी माई मंदिर परिसर में सफाई अंतर्गत जिला प्रशासन मैहर नगर पालिका परिषद के अगुवाई में मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद सामाजिक संगठनों की सहभागिता से बड़ी माई मंदिर में सफाई का कार्य किया गया। साथ ही स्वच्छता को लेकर बड़ी माई मन्दिर में शपथ भी दिलाई गई एवं चंडी देवी मंदिर से स्वछता का सन्देश देते हुए कलश यात्रा निकाली गई। नमामि गंगे अभियान के अंतर्गत कलस यात्रा चंडी माता मंदिर से घंटाघर, कटरा बाजार, कालीमाता मन्दिर होते हुए चंडी माता मंदिर में समाप्त हुई। इस अवसर पर नगर पालिका परिषद के सांसद प्रतिनिधि संतोष सोनी, ब्लॉक समन्वयक जगन सिंह, पार्षद ऋतु कोल एवं नरेश चौधरी सहित नगर पालिका के कर्मचारी एवं जिले के सभी समाजसेवी उपस्थित रहकर श्रमदान में भाग लिया।

अमरपाटन में निकाली गई कलश यात्रा: जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत नगर परिषद अमरपाटन में रविवार को वार्ड क्रमांक-13 शिवालय मंदिर गढ़ी से गौरीशंकर तालाब तक कलश यात्रा निकली गई। जल गंगा संवर्धन अभियान में कुएं, तालाब के संरक्षण एवं पुनर्जीवन के लिये लोगों से जनसहयोग कर इनके संरक्षण के लिये जागरूक किया गया। इस मौके पर नगर परिषद कर्मचारी महिला स्वसहायता समूह एवं जनप्रतिनिधि की उपस्थित में आयोजित किया गया।

महिला चरवाहों को बंधक बनाकर बकरियां लूट ले गए बदमाश

मारपीट कर पेड़ से बांध दिया, तीन घायल

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। धारकुंडी थाना क्षेत्र में महिलाओं के साथ मारपीट कर बदमाशों ने उन्हें बांध दिया और उनकी 70 नग बकरियां लूट ले गए। पुलिस ने घायल महिलाओं को इलाज के लिए अस्पताल भेज दिया और मौका मुआयना कर जांच शुरू कर दी है। जानकारी के मुताबिक, धारकुंडी थाना क्षेत्र के दुअरा जंगल मे बकरियां चराने गई महिलाओं के साथ अज्ञात बदमाशों ने मारपीट की और उन्हें पेड़ से बांध दिया।

बदमाशों ने महिलाओं की 70 नग बकरियां लूट ली। बताया जाता है कि शनिवार को जमुआनी गांव के यादव परिवार की महिलाएं बकरियां चराने गई थीं। जंगल मे उन्हें बदमाशों ने रोक लिया और मारपीट कर उन्हें रस्सी के जरिए पेड़ से बांध कर बकरियां लूट लीं।

काफी देर तक जंगल मे चीखती पुकारती रहीं। महिलाएं किसी तरह हाथ छुड़ा पाने में कामयाब हुईं तो उन्होंने घटना की जानकारी परिजनों और पुलिस को दी।

बताया गया कि बदमाशों ने पहले सोमा यादव पति राम स्वरूप यादव (40) को ही अपना निशाना बना कर मारपीट शुरू की थी। उसकी चीख पुकार सुन दो अन्य महिलाएं भी उसे बचाने पहुंची तो उनके साथ भी मारपीट कर दी गई। सूचना मिलने के बाद धारकुंडी थाना प्रभारी अभिषेक पांडेय ने जंगल मे सर्चिंग शुरू कर दी। पुलिस टीम दुअरा जंगल से अंधरा खोह जंगल तक पहुंची लेकिन रात हो जाने के कारण पुलिस को कामयाबी नहीं मिली।

शासकीय आईटीआई में प्रवेश के लिये पंजीयन की अंतिम तिथि आज

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। प्राचार्य शासकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान सतना ने बताया कि शासकीय आईटीआई में संचालित एनसीवीटी, एससीवीटी व्यवसायों में प्रवेश हेतु पंजीयन की अंतिम तिथि 10 जून 2024 तक निर्धारित की गई है। इच्छुक संस्थाओं तथा व्यवसायों की प्राथमिकता क्रम चयन हेतु की सुविधा 10 जून तक उपलब्ध रहेगी।

इच्छुक अभ्यर्थी विभाग के पोर्टल पर रजिस्ट्रेशन एवं संस्थाओं तथा व्यवसायों की प्राथमिकता क्रम चयन कर सकते हैं। प्रवेश संबंधी समस्त जानकारी पोर्टल पर उपलब्ध है। आईटीआई में प्रवेश के लिये रजिस्ट्रेशन एवं संस्थाओं तथा व्यवसायों की प्राथमिकता क्रम चयन के लिये किसी भी नजदीकी ऑनलाइन सहायता केंद्र पर कर सकते हैं।

विकासखण्ड स्तरीय रोजगार मेला आज रामपुर बघेलान में

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। शासकीय आईटीआई सतना एवं जिला रोजगार कार्यालय सतना द्वारा सिक्योरिटी गार्ड/सुपरवाइजर पद की भर्ती के लिये जिले की समस्त शासकीय आईटीआई संस्थाओं में एक दिवसीय प्लेसमेंट ड्राइव का आयोजित किया जा रहा है। जिला रोजगार अधिकारी ने बताया कि 10 जून से 20 जून तक जिले की शासकीय आईटीआई संस्थाओं में अलग-अलग तिथियों में प्लेसमेंट ड्राइव आयोजित कर एसआईएस सिक्योरिटी सर्विस में सिक्योरिटी गार्ड/सुपरवाइजर पद के लिये योग्य अभ्यर्थियों का चयन किया जायेगा।

जिला रोजगार अधिकारी ने बताया कि 10 जून को शासकीय महाविद्यालय रामपुर बघेलान, 11 जून को शासकीय आईटीआई सतना, 12 जून को शासकीय आईटीआई अमरपाटन, 13 जून को शासकीय आईटीआई मैहर, 14 जून को शासकीय आईटीआई उचेहरा, 15 जून को शासकीय आईटीआई नागौद, 18 जून को शासकीय आईटीआई रामनगर, 19 जून को शासकीय आईटीआई बिरसिंहपुर तथा 20 जून को जिला रोजगार कार्यालय सतना में प्रातः 10.30 बजे से दोपहर 3 बजे तक प्लेसमेंट ड्राइव का आयोजन किया जायेगा।

जिसमें आयु 19 से 40 वर्ष आयुवर्ग तथा 10वीं पास/फेल, 12वीं उत्तीर्ण बेरोजगार आवेदक अपने मूल रिकार्ड के साथ निर्धारित स्थान पर उपस्थित हो सकते हैं।

नगर पालिका मैहर में 16 जून तक चलेगा जल गंगा अभियान

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। प्रदेश सरकार द्वारा 5 से 16 जून, 2024 तक ''जल गंगा सर्वधन'' अभियान चलाया जा रहा है। इस अभियान में जिले के तालाबों, चेक-डेम, स्टाप-डेम, कुआ-बावड़ी व सार्वजनिक उपयोगी कूपों के गहरीकरण और मरम्मत के लिए आवश्यक गतिविधियां जनसहयोग के माध्यम से की जा रही हैं। अभियान के तहत नगर पालिका मैहर में जल संरचानाओं के साफ-सफाई एवं संरक्षण के लिये तिथिवार कार्य योजना तैयार की गई है। इसी प्रकार 10 जून को बिनैका तालाब सरपहिया तालाब, 11 जून को पटेहरा तालाब, कछिया तालाब, हरदुआ नीलकंठ तालाब, 12 जून को कछियान तालाब, सुखउवा तालाब, 13 जून को उमरी पैला तालाब, गोपाल बाग तालाब, कटिया तालाब, 14 जून को पोखरी तलैया गिरगिटा, परसोखा तलैया तथा 15 और 16 जून को लिलजी नदी बंधा के पास से जीतनगर पुलिया तक अभियान के तहत साफ-सफाई की गतिविधियां आयोजित की जायेंगी।

नगर परिषद रामनगर की कार्ययोजना: नगरीय विकास संचालनालय के निर्देश पर नगरीय निकायों में आयोजित रहे जल गंगा अभियान के तहत नगर परिषद रामनगर में 9 से 12 जून तक बिजौरा तालाब का गहरीकरण किया जायेगा। इसी प्रकार 13 और 14 जून को स्टेट बैंक के सामने नाले की सफाई तथा 15 और 16 जून को थाने के सामने के नाले की सफाई का कार्य किया जायेगा।

पूर्व सीआरपीएफ जवान की पत्नी और बेटा भी जिंदा जले

रीवा में भिड़े थे दो ट्रक, ड्राइवर बच्चों से कहकर गया था- मिठाई लाऊंगा

मीडिया ऑडीटर, रीवा निप्र। रीवा में दो ट्रकों की भिड़ंत के बाद चार लोग जिंदा जल गए। मरने वालों में पूर्व सीआरपीएफ जवान की पत्नी और बेटा भी शामिल हैं। पूर्व सीआरपीएफ जवान नागपुर में प्राइवेट जॉब करते हैं। पत्नी और बेटा उनके यहां कुछ दिन रहकर ट्रक से घर लौट रहे थे।

शनिवार शाम को हुए हादसे में दोनों ट्रक के ड्राइवर और हेल्पर की भी मौत हुई है। ट्रक ड्राइवर के चार बच्चे हैं। सबसे छोटी बच्ची तो सिर्फ6 महीने की ही है। वह बच्चों से कहकर निकला था कि दो दिन में लौट आऊंगा, आते समय खुरचन (मिठाई) लेकर आऊंगा। ट्रक ड्राइवर रीवा से प्रयागराज जा रहा था। दूसरे ट्रक को हेल्पर चला रहा था। यह ट्रक महाराष्ट्र से रीवा आ रहा था। इसका ड्राइवर कंपनी के अन्य ट्रक में सवार था। हेल्पर, पूर्व सीआरपीएफ जवान का परिचित था, इसीलिए उसकी पत्नी और बेटा उनके साथ ट्रक से रीवा लौट रहे थे।

पत्नी - बेटा कहकर निकले थे चिंता मत करना: इंद्रपाल मुंडा (40) ने इकलौते बेटे चेतन मुंडा उर्फ गोल्डी (19) और पत्नी सविता मुंडा (40) को खो दिया। दोनों शुक्रवार को नागपुर से रीवा के लिए निकले थे। वे रीवा जिले के गुढ़ में कैथा गढ़ के रहने वाले थे। इंद्रपाल ने बताया कि मैं पहले सीआरपीएफ में था। खराब स्वास्थ्य की वजह से नौकरी छोड़ दी थी। पिता और दोनों भाई एसआरपीएफ में हैं। पत्नी और बेटा शुक्रवार को यह कहकर निकले थे कि चिंता मत करना हम सही सलामत पहुंच जाएंगे। मैंने दोनों को खो दिया।

ड्राइवर ने बच्चों से कहा था- दो दिन में लौट आऊंगा: ट्रक ड्राइवर संतोष केवट (33) रीवा के महसाव के रहने वाले थे। परिजन रूपा केवट ने बताया कि संतोष उनकी भाभी के भाई थे। उनके चार बच्चे हैं- चांद (10), अमन (12), बेटू (3) और बेटी 6 महीने की है। घर के इकलौते कमाने वाले थे। शुक्रवार दोपहर 2.30 बजे बच्चों को यह कहकर घर से निकले थे कि दो दिन बाद लौट आऊंगा। आते वक्त रामपुर बघेलान की मशहूर खुरचन लेकर आऊंगा। रूपा बताती हैं कि जानकारी मिलने पर हम घटनास्थल पहुंचे। हमने पुलिसवालों से पूछा- संतोष की लाश कहां है? उन्होंने जब शव निकाला तो हम पहचान नहीं सके। शव बुरी तरह जल चुका था। हमने अपनी आंख बंद कर ली।

बेटा हर महीने पैसा बचाकर भेजता था: ट्रक हेल्पर सतीश केवट (22) गढ़ के रहने वाले थे। पिता राम प्रकाश केवट ने बताया कि सतीश घर में सबसे छोटा था, इसीलिए सभी का चहेता था। पैसे बचा कर हमें हर महीने भेजता था। उन्होंने बताया कि हम गरीब परिवार से ताल्लुक रखते हैं। किसी महीने 2 हजार तो किसी महीने 4 हजार रुपए भेज देता था। इससे हमारी छोटी- बड़ी जरूरतें पूरी होती थीं। खर्च चलाने में मदद मिल जाती थी।

ओवरटेक करने के चक्कर में हुआ हादसा: प्रत्यक्षदर्शी विवेक मिश्रा ने बताया कि हादसा ओवरटेक करने के चक्कर में हुआ। रीवा से प्रयागराज की तरफ जा रहे ट्रक ने तीन गाड़ियों को बैक टू बैक ओवरटेक किया। तीन ट्रकों को ओवरटेक करने के बाद जैसे ही वो टायर शॉप के पास पहुंचा, तभी उत्तरप्रदेश की तरफसे आ रहे ट्रक को देखकर चालक घबरा गया। इसलिए उसने ट्रक को रोड से नीचे उतारने की कोशिश की। ट्रक को नीचे उतारा नहीं जा सकता था, क्योंकि नीचे खाई थी। तब तक सामने से आ रहे ट्रक से भिड़ंत हो गई। देखते ही देखते दोनों ट्रकों के गियर बॉक्स में आग लग गई। आग की लपटें बढ़ती गई। अगर चालक जल्दबाजी के चक्कर में ट्रक को ओवरटेक न करता तो इतना बड़ा हादसा न होता।

45 मिनट की देरी से पुलिस और एक घंटे बाद आई फायर ब्रिगेड: घटनास्थल के पास रेस्टोरेंट संचालित करने वाले विवेक ने बताया कि टक्कर के बाद ट्रक से एक आदमी तेजी से कूदकर भागा। उसके बाएं पैर का अंगूठा कट चुका था। मैंने उससे पूछा कि क्या तुम ट्रक के ड्राइवर हो, इतने में वो व्यक्ति बिना कुछ बोले भाग निकला। हादसे के बाद हमें चीखने की आवाजें सुनाई दी। हम दौड़कर सड़क की ओर भागे। जाकर देखा तो ट्रकों के गियर बॉक्स में आग लग चुकी थी। पहले तो हमने लगभग 20 मिनट तक बाल्टियों में पानी भरकर आग बुझाने की कोशिश की। फिर अपने ढाबे से पाइप बिछाई, ताकि आग बुझा सकें। हमारे पास लंबी पाइप नहीं थी। इसलिए छोटी-छोटी पाइप को जॉइंट कर ट्रक तक ले गए। फिर आग बुझाने लगे। तब तक आग दूसरी तरफभी फैल गई। टायर में भी आग की लपटें उठने लगी। टायर कभी भी फट जाता, इसलिए हम दूर हट गए। 45 मिनट की देरी से पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस ने फायर ब्रिगेड को फोन किया। घटना के करीब एक घंटे बाद मौके पर फायर ब्रिगेड की टीम पहुंची। अगर समय पर दमकल की टीम पहुंचती तो स्थिति पर जल्दी नियंत्रण पाया जा सकता था।

सिंगल लेन रोड में आए दिन होते हैं हादसे: स्थानीय निवासी विजय मांझी ने बताया कि चार लोग जिंदा जल गए। इसलिए सभी लोगों का ध्यान इस ओर गया। लेकिन, इस रास्ते में आए दिन हादसे होते ही रहते हैं। इसे लेकर स्थानीय लोगों ने कई बार आवाज उठाई है। इसकी सबसे बड़ी वजह रोड का सिंगल लेन होना है। यहां महीने में चार-पांच सड़क दुर्घटनाएं होती ही रहती हैं। रतहरा बाइपास से लेकर चोरहटा बाइपास तक रोड के चौड़ीकरण की जरूरत है, क्योंकि इस रास्ते से सभी बड़े वाहन निकलते हैं। उत्तरप्रदेश से होकर आने वाले और महाराष्ट्र की तरफ जाने वाले बड़े वाहन इस रास्ते से जाते हैं। इसलिए कई बार सिंगल लेन सड़क होने की वजह से दुर्घटना के शिकार हो जाते हैं। सड़क दुर्घटना जिस जगह पर हुई है, वहां से 200 मीटर की दूरी पर कुछ महीनों पहले दो चारपहिया वाहनों की टक्कर हुई थी। इसके बाद दोनों गाड़ियों में आग लग गई थी।

जल-गंगा संवर्धन अभियान के तहत जल स्त्रोतों में किया जा रहा श्रमदान

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। राज्य शासन द्वारा संचालित जल गंगा अभियान के तहत जिले की जल संरचनाओं के संवर्धन-संरक्षण की गतिविधियां आयोजित की जा रही हैं। विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में जल-गंगा-संवर्धन-अभियान अंतर्गत 9 जून को जिले के नगर परिषद चित्रकूट में सदगुरु नेत्र चिकित्सालय ट्रस्ट के श्री वीके जैन के नेतृत्व में रघुवीर मंदिर, जानकी घाट, सीता चरण चिन्ह से ओशो आश्रम तक जल स्त्रोतों की साफ-सफाई का अभियान चलाया गया। इस अवसर पर ट्रस्ट के कर्मचारियों व नगर परिषद चित्रकूट के कर्मचारियों ने मिलकर सहभागिता निभाई गई।

जल गंगा संवर्धन अभियान से सलेहना में की गई सफाई: राज्य शासन द्वारा संचालित जल गंगा अभियान के तहत जिले की जल संरचनाओं के संवर्धन-संरक्षण की गतिविधियां आयोजित की जा रही हैं। अभियान के माध्यम से जल संरचनाओं के जीर्णोद्धार का कार्य किया जा रहा है। अभियान के तहत नदी, तालाब, बावड़ियों, चेक डैम, नालों की साफ सफाई का कार्य को जनभागीदारी से किया जा रहा है। जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत रविवार को रामपुर बघेलान अंतर्गत ग्राम सलेहना की सफाई की गई। इसी प्रकार नागौद जनपद पंचायत के ग्राम पंचायत झींगोदर, कोटा-2 में साफ-सफाई का अभियान चलाया गया।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया प्रकाशन रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय प्रभात बिहार कॉलोनी सतना से प्रकाशित, संपादक संदीप द्विवेदी आर.एन.आई नं.एमपीएचआईएन/2021/81683
प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9407132714, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार, सभी विवादो का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।